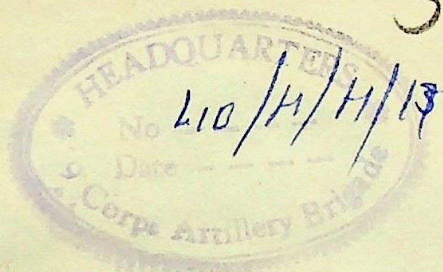
हकलबरी फ़िन

मार्क ट्वेन

रूपान्तर

ओंकार शरद्




HEADQUARTERS
No 410/14/11/19
Date
9 Corps Artillery Brigade

हकलबेरी फ़िन



राधाकृष्ण प्रकाशन

हकलबरी फ़िन

मार्क ट्वेन

रूपान्तर

ओंकार शरद्



१९७५

मूल्य : ६ रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
२ अन्सारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-११०००६

मुद्रक
सोहन प्रिंटिंग सर्विस
जी३५/१६१९ एफ, सुभाष पार्क
नवीन शाहदरा, द्वारा
कुमार ब्रादर्स प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित

हकलबेरी फ़िन

हकलबेरी फ़िन

मार्क ट्वेन कृत 'एडवेंचर्स ऑफ़ हकलबेरी फ़िन' का संक्षिप्त अनुवाद

रूपांतरकार

ओंकार शरद



राधाकृष्ण प्रकाशन

मूल्य
६ रुपये

प्रकाशक :
राधाकृष्ण प्रकाशन
२ अन्सारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-११०००६



मुद्रक
सोहन प्रिंटिंग सर्विस
जी ३५/१६१६ एफ, सुभाष पार्क
नवीन शाहदरा, द्वारा
कुमार प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित

आप मेरे बारे में नहीं जान सकते, जब तक आप 'टाम सायर के साहसिक कार्य' नामक पुस्तक न पढ़ें। इस पुस्तक को श्री मार्क ट्वेन ने लिखा और मोटे तौर पर उन्होंने सब सच ही लिखा है। कुछ बातें बढ़ा-चढ़ा कर कहीं हैं—लेकिन हैं सच ही। लेकिन कोई बात नहीं। मैंने ऐसा कोई आदमी नहीं देखा जो कभी-न-कभी झूठ न बोले। हाँ, इसकी अपवाद थीं वह विधवा, पोली मौसी, शायद मेरी भी। पोली मौसी—टॉम की मौसी पोली, और मेरी, और विधवा डगलस—सबों के बारे में किताब में लिखा है, जो एक सच्ची किताब है।

उस किताब का अंत इस प्रकार हुआ है—टाम और मैंने वे रुपये पा लिये जो डाकुओं ने गुफा में छिपाये थे, और हम लोग अमीर हो गये। हम दोनों को सोने के रूप में छः-छः हज़ार डालर मिले। सब रुपयों की जो ढेरी बनी वह अजीब दृश्य उपस्थित करती थी। जज थैचर ने उन रुपयों को ब्याज पर उठा दिया और उससे हमें—अलग-अलग दोनों को एक-एक डालर प्रतिदिन मिलने लगा—पूरे साल तक। इतनी आमदनी होने लगी कि समस्या थी कि क्या किया जाये। विधवा डगलस ने मुझे इसलिए गोद ले लिया कि वह मुझे सभ्य बनायेगी। लेकिन उस घर में हर घड़ी किचकिच रहती। वह विधवा रहन-सहन में बड़ी चौकस और भली थी। लेकिन जब मैं अधिक सह न पाया तो मैं भाग खड़ा

हुआ। मैंने अपने पुराने, फटे कपड़े पहने और आज़ाद होकर संतुष्ट हो गया। तभी टाम सायर ने मुझे खोज निकाला और बताया कि वह एक डाकू-दल बनाने जा रहा था, और मैं भी उसमें शामिल हो सकता हूँ यदि मैं विधवा के पास वापस चला जाऊँ और शरीफ बन जाऊँ। सो, मैं वापस लौट गया।

लौटने पर विधवा मुझे गले लगा कर खूब रोयी। उसने फिर मेरे लिए नये कपड़े बनवा दिये। मैं विवश होकर वहाँ रह गया। और वही पुराना चरखा फिर चलने लगा। हर क़ायदे-क़ानून का पालन शुरू हुआ—घंटी बजते ही खाने के लिए हाज़िर होना। बुढ़िया खाने की चीज़ों पर सिर झुका कर कुछ बड़बड़ाती। खाने की चीज़ें खूब स्वादिष्ट होतीं।

रात के खाने के बाद बुढ़िया किताब पढ़ कर मुझे मोसेज और बुलरशर्स के बारे में सुनाती। मोसेज के प्रति मेरी दिलचस्पी खूब बढ़ी। लेकिन जब मालूम हुआ कि मोसेज को मरे तो काफी समय बीत गया है तो मैं उसके प्रति उदासीन हो गया। जो मर जाये उसे मैं महत्त्व नहीं देता।

मैं जब विधवा से तमाखू पीने की इजाज़त माँगता तो वह मना करती, इसे गंदी आदत बताती। बुढ़िया भी अजीब थी। मरे हुए मोसेज को लेकर परेशान रहती और मुझे तमाखू पीने को बुरी आदत बताती। वह खुद नसवार लेती और उसे अच्छी आदत समझती।

विधवा डगलस की दुबली-पतली खूसट बुढ़िया बहन उसके पास रहने आयी थी। बुढ़िया के पढ़ा चुकने पर वह रंगीन चश्मा लगा कर हिज्जे की किताब लेकर बैठती और मेरा सिर खाने लगती। लेकिन घंटे-भर से ज़्यादा मैं उसे बरदाश्त न कर पाता। इस बीच बुढ़िया हुक्म चलाती रहती—'हकलबेरी, पाँव यों मत रखो, यों कुबड़ निकाल कर मत बैठो, यों मुँह खोल कर जम्हाई मत लो, ईश्वर जाने तुम्हें कब तमीज़ आएगी!'—यह बताते हुए वह नर्क के बारे में बताने लगी तो अचानक मेरे मुँह से निकला—'काश, मैं वहाँ जा पाता!'—बस वह बेहद

नाराज़ ! फिर उपदेशों की झड़ी लग गयी—'ऐसी बुरी ग्रौर ग्रशुभ बात मुँह से मत निकालो, मेरे मुँह से ऐसी बात कभी नहीं निकल सकती। मैं ऐसे जिऊँगी कि ग्रन्त में स्वर्ग जा सकूँ।' इसके बाद वह स्वर्ग के बारे में बताने लगी—'वहाँ किसी को कुछ नहीं करना पड़ता, बस सारे दिन मौज की वंशी बजाग्रो ग्रौर चैन से घूमो।' लेकिन ऐसा स्वर्ग मुझे पसंद नहीं। मैंने पूछा—'क्या टाम सायर वहाँ जा सकता है ?' वह बोली, 'कभी नहीं।' सुन कर मुझे खुशी हुई। क्योंकि मैं तो उसके साथ ही रहना चाहता था।

रात को प्रार्थना कर के जब दोनों बहनें सोने चली गयीं तब मैं एक मोम-बत्ती लेकर ऊपर ग्रपने कमरे में ग्राया। कुर्सी खींच कर खिड़की के पास बैठ कर कुछ सोचने लगा। बड़ी उदासी ग्रौर ग्रकेलापन लग रहा था। जी चाहता था, मर जाऊँ। ग्राकाश के तारों की चमक भी उदास लग रही थी। तभी कहीं दूर एक उल्लू बोला—घू-घू...मृत्यु की याद दिलाता हुग्रा, तत्काल बाद एक ग्रबाबील ग्रौर एक कुत्ता एक साथ ही चीत्कार कर उठे, मृत्यु की सूचना देते हुए। मेरे रोंगटे खड़े हो गये। तभी मुझे दूर जंगल से ग्राती एक कराह सुनाई पड़ी। किसी मृत-ग्रात्मा की पैशा-चिक ग्रावाज़, जो चाह कर भी मन की बात न कह सके, इसी से हर रात ग्रपनी कब्र से निकल कर कराहती हुई भटकती है। मैं बुरी तरह डर गया। तभी एक मकड़ी कहीं से टपक कर मेरे कंधे पर रेंगने लगी। मैंने जो झटका दिया तो वह मोमबत्ती की लौ में जा गिरी ग्रौर क्षण-भर में ही जल कर खाक हो गयी। यह भारी ग्रपशकुन हुग्रा। मैं समझ गया कि ज़रूर कुछ बुरा होने वाला है। मैं बुरी तरह डरा। फिर ग्रपने कपड़ों को झाड़-झूड़ कर ग्रला-बला झटकी ग्रौर तीन बार छाती पर सलीब का चिन्ह बनाया। मैंने एक धागे से ग्रपने बालों की एक लट को बाँधने की कोशिश की ताकि चुड़ैल पास न ग्रा सके। मैंने सुना था कि घोड़े की नाल मिल जाये ग्रौर दरवाज़े पर जड़ी जाने के पहले खो जाये तो इस टोटके से ग्रपशकुन मिट जाता है ग्रौर चुड़ैलें पास नहीं

फटकतीं। लेकिन मुझे नहीं मालूम कि मकड़ी मारने के अपशकुन को मिटाने का टोटका क्या है।

मन को सम्हालने के लिए मैंने तम्बाकू पीने के लिए अपना पाइप निकाला। घर में सभी सो रहे थे। चारों ओर मौत का सन्नाटा था। काफी देर बाद टन-टन करके बारह बजे। सन्नाटा पूर्ववत था। तभी अँधेरे में टहनी के टूटने की आवाज़ आई। ज़रूर कोई अँधेरे में चल रहा है। मैं दम साध कर अंदाज़ लेने लगा। थोड़ी देर बाद धीमी-धीमी आवाज़ आई—म्याऊँ-म्याऊँ ! सुन कर मेरे जी में जी आया। मैंने भी धीरे से उत्तर दिया—म्याऊँ-म्याऊँ।

फिर बत्ती बुझा कर खिड़की की ओर से छत पर आया। वहाँ से खिसक कर नीचे उतरा और पेड़ों के बीच चलता हुआ आगे बढ़ा। वहाँ खड़ा टाम सायर मेरी ही प्रतीक्षा कर रहा था।

पंजों के बल झुके हुए, हम दोनों आगे बढ़ रहे थे। ज्यों ही रसोईघर के सामने से हम गुज़रे कि एक उभरी जड़ से ठोकर खाकर मैं गिर पड़ा। धड़ाम की आवाज़ हुई। हम दोनों दम साध कर वहीं दुबक गये। विधवा का नौकर हब्शी जिम वहीं था। आवाज़ सुनते ही वह दरवाज़े से झाँक कर देखने लगा। फिर आवाज़ दी, 'कौन है ?'

हम चुप रहे। लेकिन उसका शक न मिटा और आहट लेता हुआ आकर वह ठीक हम दोनों के बीच खड़ा हो गया। इसी तरह वह बड़ी देर तक खड़ा रहा। तभी अचानक मेरे शरीर में कई जगह खुजली होने लगी। लगा जैसे सारे शरीर पर चींटियाँ चल रही हैं। लेकिन आवाज़ होने के डर से खुजलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। और इधर खुजली बढ़ती ही जा रही थी।

जिम खड़ा-खड़ा बड़बड़ाने लगा—'बोलो, कौन हो, कहाँ हो ? मैंने किसी को गिरते सुना है । खैर, मैं यहीं बैठ कर देखता हूँ ।' कह कर वह मेरे और टाम के बीच ही धम् से बैठ गया । फिर उसने अपनी टाँगें भी फैला दीं । उसकी टाँगें मेरी टाँग से भिड़ते-भिड़ते बचीं ।

अब मेरी नाक में खुजली उठी । फिर कई जगह चुनचुनाहट होने लगी । तभी थोड़ी देर बाद जिम की नाक बजने लगी । धीरे-धीरे खुजली अपने आप मिट गयी ।

टाम ने इशारा किया और हम रेंग कर आगे बढ़े । टाम ने फुसफुसा-कर कहा—'क्यों न जिम को पेड़ से बाँध दें ।' मैंने पकड़े जाने के डर से मना किया । टाम ने फिर कहा—'मेरे पास मोमबत्तियाँ नहीं हैं, चलो रसोईघर से ले लें ।' मैंने फिर मना किया लेकिन टाम न माना । रसोईघर में जा कर तीन मोमबत्तियाँ ले कर उनकी कीमत पाँच सेंट उसने मेज़ पर रख दिये । मैं अँधेरे में आगे बढ़ा लेकिन टाम को शरारत सूझ रही थी । वह सोते हुए जिम के पास गया । उसने जिम की टोपी उसके सिर से उतार कर ऊपर टहनी पर टाँग दी ।

हम लोग मकान के दूसरी ओर वाली पहाड़ी की ढाल पर चढ़ने लगे ।

बाद में जिम ने लोगों को बताया कि रात को चुड़ैलों ने आकर उस पर सवारी की और सारी दुनिया में दौड़ाया । फिर ला कर यहाँ छोड़ दिया । सबूत के लिए उसकी टोपी को ऊपर टहनी पर टाँग दिया । वह अन्य हब्शियों को खूब नमक-मिर्च लगा कर यह क़िस्सा सुनाता । उसने पाँच सेंट के सिक्के को धागे में पिरो कर ताबीज़ की तरह पहन लिया और दूसरे हब्शियों से बताया कि इस ताबीज़ से वह हर बीमारी को अच्छा कर सकता है । चुड़ैलों के इस सम्पर्क का परिणाम यह हुआ कि उसके दिमाग पर चुड़ैलें पूरी तरह छा गयीं और वह किसी काम के लायक़ न रह गया ।

खैर, हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये । वहाँ से घूम कर गाँव की

ओर देखा तो केवल तीन-चार जगह रोशनी दिखाई दी। आकाश में तारे चमक रहे थे। गाँव के किनारे नदी का पाट खूब चौड़ा और शांत दिख रहा था। हम बढ़ते हुए पहाड़ी के उस पार उतरे। वहाँ चमड़ा रँगने के एक कारखाने में बोन राजर्स और दो-तीन दूसरे लड़के छिपे बैठे मिले। हम सबों ने वहीं घाट पर बँधी एक डोंगी खोली और उसी पर सवार होकर चल पड़े। डेढ़ मील की दूरी पर एक झील मिली। डोंगी को वहीं किनारे लगा कर हम उतरे।

टाम हम सबों को घनी झाड़ी में ले गया। वहाँ उसने हमसे शपथ ली कि हम कभी यह भेद न खोलेंगे। वहाँ गुफा में घुसने के लिए एक सूराख-जैसा बना था। अब मोमबत्तियाँ जला कर, पेट के बल रेंगते हुए हम आगे बढ़े। लगभग दो सौ गज़ इसी तरह रेंगने के बाद थोड़ी-सी खुली जगह मिली। यहाँ इधर-उधर देख कर टाम एक दीवार के नीचे ग़ायब हो गया। यह एक सुरंग का मुँह था। उसमें से होकर हम एक ऐसी जगह पहुँचे जो चारों ओर से बंद कमरे जैसी लग रही थी। नमी और ठण्ड के साथ वहाँ पानी की बूँदें भी टपक रही थीं। यहाँ पहुँच कर हम लोग रुके।

टाम के निर्देशानुसार वहाँ हमारे डाकू-दल की स्थापना हुई। दल का नाम रखा गया—'टाम सायर का डाकू-दल'। इसमें सम्मिलित सभी सदस्यों ने अपने खून से हस्ताक्षर कर के प्रतिज्ञा की।

टाम ने यह प्रतिज्ञा-पत्र डाकुओं की सच्ची कहानियों की किताबों से छाँट कर बनाया था। टाम ने कार्यक्रम भी बताया। उसने कहा—

'हम चोर या उठाईगीर नहीं है। डाकू हैं, असली खानदानी डाकू और खुले आम डकैती करेंगे। हमारा काम होगा—राह चलती सवारियों और गाड़ियों को रोकना, लूटना और खून करना। हम नकाब पहनेंगे और लोगों को मार कर उनकी घड़ियाँ और रुपये पैसे ले लेंगे।'

दल के एक सदस्य ने पूछा, 'क्या हम हर बार लोगों की हत्या करेंगे?'

'ज़रूर। यही ठीक तरीक़ा है। कुछ को हम पकड़ कर गुफा में लाकर बंद करेंगे और तब तक बन्द रखेंगे जब तक उनकी फिरौती[1] न आ जाये।' टाम ने कहा।

'यह फिरौती क्या है?'

'मैं ठीक नहीं जानता। लेकिन किताबों में ऐसा ही लिखा है। इस-लिए हम लोग भी यही करेंगे।'

'लेकिन फिरौती के बारे में जाने बिना हम पकड़े गये व्यक्तियों का क्या करेंगे?'

'फिरौती के बारे में किताबों में लिखा है, इसलिए हमें भी फिरौती को व्यवहार में लाना होगा। शायद इसके माने यही हैं कि पकड़े गये आदमी को मरने तक रोक रखा जाये। ऐसे बन्दी शायद भागने की भी कोशिश करेंगे, इसलिए पहरेदार भी रखना होगा।'

'क्या हम लोग औरतों का भी खून करेंगे?'

'वाह, औरतों का खून क्यों करेंगे? यह तो किसी किताब में नहीं लिखा है। हम औरतों को गुफा में लावेंगे, उनके साथ खूब भद्रता का व्यवहार करेंगे और धीरे-धीरे वे हमसे प्रेम करने लगेंगी और फिर कभी अपने घर लौट कर जाना न चाहेंगी।'

'फिर तो थोड़े दिनों में सारी गुफा औरतों से ही भर जायेगी। फिर हम डाकुओं के लिए वहाँ जगह भी न रहेगी। खैर, जैसा किताबों में लिखा है वही करना है तो ठीक है।'

इतने में छोटे टामी वार्न्स को नींद आ गयी। जब उसे जगाया गया तो वह चीखने और रोने लगा कि वह अपनी माँ के पास घर जायेगा और डाकू नहीं बनेगा।

सभी उसका मज़ाक बनाने लगे। उसे 'रोना लड़का' कहना शुरू

---

१. वह रक़म फिरौती कही जाती है जिसे प्राप्त करके डाकू पकड़े हुए व्यक्तियों को मुक्त करते हैं।

किया। इस पर वह और रोया और बोला कि वह जाकर सबों का सब कुछ बता देगा। तब टाम ने उसे पाँच सेंट देकर चुप कराया। फिर दूसरे दिन मिलने की बात तय हुई। टाम सायर को हमने अपना प्रथम कप्तान चुना और जो हार्बर को उप-कप्तान। फिर हम सब घरों के लिए चल पड़।

मैं छत पर चढ़ कर खिड़की से जब कमरे में आया तब सबेरा हो रहा था। मेरे नये कपड़े खूब गंदे, दाग़दार और चीकट हो गये थे। मैं बुरी तरह थक गया था।

सबेरे मेरे कपड़ों की दशा देख कर वाटसन ने खूब डाँटा, लेकिन बेचारी विधवा ने कुछ न कहा। वह चुपचाप मेरे कपड़ों के दाग़ छुटाने लगी। वाटसन मुझे कमरे में ले गयी और प्रार्थना करने लगी। उसने मुझसे कहा कि प्रार्थना करके जो माँगोगे वह मिलेगा।

एक बार मुझे एक बंसी मिल गयी, पर उसमें काँटे न थे। मैंने कई बार प्रार्थना की लेकिन काँटे न मिले। मैं समझ गया कि प्रार्थना करना बेकार है। लेकिन विधवा कभी-कभी मुझे किसी एकान्त में बैठा कर ईश्वर के बारे में तरह-तरह की सुन्दर और सरस कहानियाँ सुनाती और ईश्वर की दयालुता की बातें बताती। मैं सुन कर विभोर हो जाता और ईश्वर के प्रति आकर्षित होता। लेकिन दूसरे ही दिन मिस वाटसन सब बेकार कर देतीं। वह ग़लतियाँ करने वालों पर परमात्मा के कोप के क़िस्से सुनाती और ईश्वर के प्रति मेरा आकर्षण बेकार हो जाता। मुझे लगा कि विधवा का ईश्वर भला है और वाटसन का ईश्वर गुस्से वाला है। मुझे विधवा का ईश्वर ही पसन्द आया।

इधर साल-भर से मुझे मेरे पिताजी दिखायी नहीं पड़े थे। मैं इस बात से बहुत प्रसन्न था और मन ही मन मनाता रहता कि वे कभी न आवें। वे मारते-मारते मुझे अधमरा कर देते थे और उनके डर से

मुझे जंगल में छिप कर रहना पड़ता था। लोगों का ख़याल था कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। वे नदी में डूब मरे हैं। नदी में तैरती एक लाश भी लोगों ने देखी थी जिसे मेरे पिता की लाश समझा था। लेकिन मुझे अभी तक अपने पिता की मृत्यु पर विश्वास न हुआ था और कभी भी उनके लौट आने की आशंका मेरे मन में बनी ही रहती थी।

कभी-कभी हम लोग जंगल में मिलते और डाकू-दल का खेल खेलते। यह खेल कोई महीने-भर चला होगा कि मैं दल से अलग हो गया और फिर धीरे-धीरे सभी दल से अलग हो गये। न तो हमने किसी को लूटा, न किसी का खून किया। बस झूठ-मूठ यह खेल कर के अपने को डाकू कह कर डींगें हाँकते रहे। टाम सायर झूठी-मूठी कहानियाँ कह कर दून की हाँकता रहता। एक बार उसने हीरे-जवाहरातों से लदे ऊँटो और हाथियों के काफिले का ज़िक्र किया कि वे इधर से गुज़रने वाले हैं और उन्हें लूटना चाहिए। बड़ी तैयारी करके जब हम लोगों ने हमला किया तो ऊँटों-हाथियों की जगह कुछ स्कूली बच्चे दिखे जो पिकनिक पर जा रहे थे। उन्हें डरा और धमका कर हम लोगों ने हीरे-जवाहरातों की जगह केक, रोटी, चटनी, मुरब्बे आदि छीने।

जब इस बात की मैंने टाम सायर से शिकायत की कि तुमने झूठ ही हम लोगों को बहकाया है तो उसने कहा कि तुमने 'डॉन क्विक्ज़ोट' किताब नहीं पढ़ी। पढ़ी होती तो समझ पाते कि जादूगर ने जादू के ज़ोर से ऊँटों और हाथियों को स्कूली लड़के बना दिया है।

जादूगरों के संबंध में बताते हुए उसने हमें पुराने दिए और लोहे की अँगूठी रगड़ कर जिन बुलाने और उनसे मनमाना काम कराने के जादूगरों के क़िस्से भी बताये।

बाद में मैंने जंगल में छिप कर पुराना दिया और लोहे की की अँगूठी रगड़ कर जिन बुलाने की बहुत कोशिश की लेकिन मुझे सफलता न मिली। इसे भी मैंने टाम सायर की गप्प ही समझा।

इन्हीं चक्करों में तीन-चार महीने बीत गये।

अब मैं स्कूल भी जाने लगा था। वहाँ थोड़ा पढ़ना-लिखना सीखा। लेकिन मैं गणित में कुछ भी न सीख पाया। गणित विषय मुझे कभी नहीं भाया। पहले तो स्कूल के नाम से मैं चिढ़ता था, लेकिन धीरे-धीरे आदत पड़ गयी। इसका अच्छा परिणाम यह हुआ कि विधवा की राय बन गयी कि मैं अब धीरे-धीरे सुधर रहा हूँ। वह अब मुझे लेकर खूब प्रसन्न रहती थी।

एक दिन मैं जब बाहर निकला तो ज़मीन पर वर्फ की एक इंच मोटी तह जमी थी। उसी में मैंने किसी व्यक्ति के पावों के निशान देखे। ग़ौर से देखा पर कोई सुराग़ न मिला कि यह कौन आया होगा। शक हुआ कि कहीं मेरे पिता जी तो नहीं आये।

मैं सीधे जज थेचर के यहाँ पहुँचा। देखते ही उन्होंने पूछा, 'क्या अपना व्याज लेने आये हो ?'

मैंने पूछा, 'कुछ व्याज इकट्ठा हुआ है क्या ?'

'हाँ, पूरे डेढ़ सौ डालर हैं। अगर चाहो तो इन्हें भी छः हज़ार के साथ कहीं व्याज पर लगा दूँ। तुम ले लोगे तो खर्च कर डालोगे।'

'नहीं जज साहब, मुझे न व्याज चाहिए, न मूल। यह सब आप ही रख लीजिये।'

'तुम यह क्या कह रहे हो ? शायद तुम अपनी सारी जायदाद मेरे हाथ बेचना चाहते हो।'

मैं चुप रहा। जज साहब ने बयनामा लिखा और मुझसे दस्तखत करा कर मुझे एक डालर दे दिया।

जब मैं लौट कर घर आया और मोमबत्ती ले कर अपने कमरे में गया तो वहाँ मेरे पिताजी बैठे थे।

उन्हें देखते ही मुझ पर डर का आतंक छाने लगा लेकिन मैंने अपने को सम्हाल कर निर्भय बनाया। इस समय उनकी अजीब शक्ल बनी थी। फटे जूते से पाँव की उँगलियाँ दिख रही थीं। मैंने मोमबत्ती को मेज़ पर रखा। खिड़की खुली थी। मैं समझ गया कि वे छत पर से

खिड़की की राह भीतर आये हैं। मैं बीच-बीच में उनकी ओर देख लेता था। वे एकटक मुझे घूर रहे थे। फिर बोले, 'इतने अच्छे कपड़े ! तू बड़ा आदमी बन गया है ? बड़ा घमण्डी हो गया है ? मैं तेरा घमण्ड झाड़ दूँगा। सुना है कि पढ़-लिख भी गया है। यह पढ़ने-लिखने की बेवकूफी किसने सिखायी ?

'विधवा ने।' मैंने धीरे से कहा।

'वह राँड ! उसे हमारे घर में दखल देने को किसने कहा ? अब तू कभी स्कूल नहीं जायेगा ! समझा ! मैं तो निरक्षर हूँ और बेटा पढ़ता है ! तेरी माँ भी निरक्षर थी। मेरे ख़ानदान में कभी कोई पढ़ा-लिखा न था। फिर तू ही क्यों पढ़ेगा ? अच्छा ज़रा पढ़ कर तो सुना, देखूँ !'

मैंने एक किताब उठा कर पढ़ना शुरू किया। लेकिन आधे मिनट बाद ही झपट कर किताब छीन ली और दूर फेंक कर बोले, 'बस, बस ! समझ गया।'

इसी तरह वे देर तक बड़बड़ाते रहे। फिर तेज़ी से बोले, 'लोगों से सुना है कि तेरे पास बहुत रुपये हैं ! मैं वह रुपये ही लेने आया हूँ। मुझे रुपयों की ज़रूरत है।'

'मेरे पास एक पैसा भी नही है।'

'झूठ बोलता है ? सब रुपये जज थेचर के पास रखे हैं। मैं सब पता लगा कर आया हूँ।"

'आप जज साहब से ही पूछ लीजिये। मेरे पास कुछ नहीं है।'

'ठीक है, उससे ही पूछूँगा। वह हमारे रुपये मार नहीं सकता। हाँ, अभी तेरी जेब में कितना है ? ला दे मुझे।'

'सिर्फ एक डालर है।'

उन्होंने वह डालर मुझसे छीन लिया और बोले, 'चलूँ, थोड़ी दारू पी आऊँ। सवेरे से गला सूख रहा है।'

कह कर वे खिड़की से कूद कर छत की राह चले गये।

दूसरे दिन शराब के नशे में चूर वे थेचर साहब के घर गये। उन्हें

खूब गालियाँ सुन कर रुपये माँगे। पर जज साहब ने एक न सुनी और अदालती कार्यवाही की धमकी देकर भगा दिया।

अगले दिन जज थेचर और विधवा ने मिल कर अदालत में अर्ज़ी दी। जज नया था। उसने फैसला दिया कि अदालत को किसी के पारिवारिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इस प्रकार जज साहब व विधवा की अर्ज़ी नामंज़ूर हो गयी।

अब पिताजी की खुशी का क्या पूछना था! गाँव-भर में घूम-घूम कर उन्होंने जज थेचर व विधवा को गालियाँ दीं। खूब शोर मचाया। इतना कि गाँव की पुलिस उन्हें पकड़ ले गयी और अदालत में पेश किया। उन्हें हंगामा करने के अपराध में एक हफ़्ते की कैद की सज़ा मिली।

एक हफ़्ते बाद जेल से छूट कर पिताजी फिर जज थेचर के घर गये। इस बार जज थेचर ने उन्हें खूब अच्छा खाना खिलाया, नये कपड़े पहनने को दिये और तरह-तरह से समझाया कि शराब कितनी बुरी चीज़ है। पिताजी ने भी शराब न पीने और शरीफ़ों की तरह रहने का वायदा किया। तब खुश होकर जज साहब ने उन्हें अपने यहाँ के सबसे अच्छे मेहमानों के कमरे में रहने की इजाज़त दे दी।

उसी रात आराम से जज साहब के आरामदेह कमरे में रहते हुए पिताजी को एकाएक प्यास लगी और उनका गला सूखने लगा। वे बरसाती की छत पर से होते हुए एक खम्भे के सहारे बाहर आ गये। सीधे शराबखाने गये और अपना नया कोट देकर चालिस पेग का बड़ा कंटर शराब से भर लाये। तब तक सवेरा होने लगा था। पिताजी ने खूब शराब पी ली थी। उसी नशे में शराब का पीपा लेकर वे बरसाती की छत पर चढ़ने लगे। उसी में लड़खड़ा कर गिरे और बाएँ हाथ की हड्डियाँ दो जगह से टूट गयीं। लोग दौड़े।

जज साहब का गुस्से से बुरा हाल था। लेकिन वे क्या करते!

थोड़े दिनों बाद अच्छे होकर पिताजी जज थेचर और मेरे पीछे

हाथ धो कर पड़ गये। रुपयों के लिए जज साहब पर मुक़दमा दायर किया। मुझे जब भी अकेला पाते खूब पीटते। बीच-बीच में विधवा के यहाँ भी जाकर हंगामा करते और गालियाँ बकते।

लेकिन वे मुक़दमे की धीमी चाल से परेशान थे। महीनों हो गये पर अभी तक मुक़दमे की सुनवाई ही न हुई थी। वे जितनी जल्दी मुक़-दमे का फैसला चाहते थे उतनी ही देरी हो रही थी।

ऊब कर एक दिन उन्होंने मुझे पकड़ा और नाव से तीन मील चल कर मुझे घसीटते हुए एक जंगल में ले गये। बड़ा बीहड़ जंगल था। दूर-दूर तक कहीं आदमी का नाम-निशान न था। वहाँ एक झोंपड़ा था, लकड़ी का। उसी में मुझे बन्द कर दिया। जब भीतर रहते तो भीतर से ताला बन्द रखते और जब बाहर जाते तो बाहर से ताला बंद करके मुझे भीतर क़ैद रखते। वे मछलियाँ मार कर व शिकार करके हम दोनों का पेट भरते। फिर वही शिकार बेच कर कहीं से शराब लाते।

यहाँ मुझे कैद हुए काफी दिन बीत गये। धीरे-धीरे मैं वहाँ के जीवन से आदी हो गया। अच्छा भी लगने लगा। न तो विधवा का अनुशासन था, न स्कूल की पढ़ाई का झंझट। सिर्फ पिताजी की मार के अलावा यहाँ मुझे कोई कष्ट न था।

मैं पिताजी द्वारा की गयी पिटाई से बुरी तरह परेशान था। भागने को कोई रास्ता न था। एक बार मुझे भीतर बंद करके पिता जी गये तो तीन दिनों तक वापस न आये। मैं अकेला बुरी तरह घबरा गया था। पिताजी इतने सतर्क थे कि झोंपड़ी के भीतर चाकू, कुल्हाड़ी या ऐसी कोई चीज़ न छोड़ते जिससे मैं भागने की कोशिश कर सकूँ। मैंने झोंपड़ी का एक-एक कोना छान डाला। अचानक, एक जगह मुझे एक पुरानी ज़ंग लगी बिना हत्थे की आरी पड़ी मिली। मैंने तेल लगा-लगा कर आरी की ज़ंग छुड़ायी और उसी से एक धरन काटने लगा। मुझे विश्वास था कि अपने भागने-भर लायक जगह बना कर मैं इस बार निकल सकूँगा। लेकिन जैसे ही काम खत्म होने को आया कि जंगल में

पिताजी की बंदूक की ग्रावाज़ सुनायी पड़ी। मैंने झटपट लकड़ी के टुकड़े, बुरादा ग्रौर ग्रारी छिपा दी।

भीतर ग्राकर पिता जी ने मुझ से नाव से सामान उतार लाने को कहा। वे क़स्बे से ग्रनाज, सुग्रर का गोश्त, बारूद-छर्रे, शराब भरे पीपे ग्रौर बंदूक लाये थे।

मैं खाना पकाने लगा ग्रौर पिताजी शराब पीने में व्यस्त हो गये। रात का ग्रँधेरा छाने लगा था। शराब का नशा जब चढ़ गया तब वे उठे ग्रौर एक ग्रोर को बढ़े तभी नीचे पड़े मांस के भगोने से पाँव में ठोकर लगी। उँगली में चोट लग गयी। बस फिर क्या था! वे लगे उछलने ग्रौर दुनिया-भर को गालियाँ देने।

बाद में ग्रौर शराब पीने के बाद शांत हुए। मैं तब तक थक कर सो गया था। ग्रचानक शोर सुन कर मेरी नींद खुली। देखा पिताजी झोपड़ी-भर में नाचते हुए चिल्ला रहे थे—'साँप! साँप! पाँव पर चढ़ रहा है! गले से लिपट गया।'

मैंने दौड़ कर देखा। पर वहाँ कहीं साँप न था। मैंने इसे भी नशे का ग्रालम समझा ग्रौर लेट गया।

फिर पिताजी की चीख़ सुनायी पड़ी—'भूत-प्रेत पकड़े लिये जा रहे हैं। बचाग्रो, बचाग्रो!"

फिर खुद ही कम्बल में लिपट कर मेज़ के नीचे घुस गये। मैं चुपचाप पड़ा रहा। पिताजी बिल्कुल पागलों का-सा व्यवहार कर रहे थे। थोड़ी देर बाद उनकी नाक बजने लगी।

दूसरे दिन सबेरे मैं देर तक सोता रहा। पिताजी ने ही जगाया। पिताजी ने ताला खोला ग्रौर मैं बाहर ग्राया। नदी किनारे गया। देखा, पानी बढ़ रहा था। खूब लकड़ियाँ ग्रौर लट्ठे बह कर ग्रा रहे थे।

ग्राज मेरी क़िस्मत सिकंदर थी। तेरह-चौदह फुट लंबी एक नाव तैरती चली ग्रा रही थी। पिताजी से ग्राँखें बचा कर मैं तैरता हुग्रा उसी ग्रोर बढ़ा। नाव के पास जाकर देखा। उस पर कोई न था। नाव

पर चढ़ कर, उसे खे कर मैं किनारे पर लाया। फिर खींच कर एक नाले में बेंत और झाड़ियों की ओट में छिपा कर बाँध दिया। मन में निश्चय किया कि मौक़ा मिलते ही इसी नाव से भाग जाऊँगा।

नाव को छिपा कर जब मैं ऊपर आया तो देखा कि पिताजी बैठे एक चिड़िया पर निशाना लगा रहे थे। मैं निश्चित हुआ कि उन्होंने मुझे देखा न था।

जब देखा तो मेरे गीले कपड़ों को देख कर गालियाँ बकने लगे। मैंने कहा कि फिसल कर नदी में गिर पड़ा था। वे चुप रहे। जाल में पाँच-छह मछलियाँ फँसी थीं, उन्हें ले कर हम लौट आये।

घर आ कर मैं सोचने लगा कि यही अवसर है जब मैं पिताजी और विधवा दोनों से मुक्त हो सकूँगा।

दोपहर को पिताजी गहरी नींद सो गये। मैं भी सो गया। क़रीब तीन बजे वे उठे और मुझे भीतर बंद कर के झोपड़ी में ताला लगा कर चले गये। जब उन्हें गये थोड़ी देर हो गयी तो मैं भी उठा। आरी निकाली और उस दिन का बचा काम पूरा करने लगा। जल्दी ही मेरे निकलने लायक़ छेद बन गया।

मैंने अनाज का बोरा, मांस का भगौना, शराब का पीपा, आरी, कम्बल, कॉफी बनाने का बर्तन और पतीली, मछली पकड़ने की डोरियाँ और बन्दूक यानी घर का सारा सामान ले जा कर अपनी छिपायी हुई नाव पर लादा। नाव ले कर मैं चलने ही वाला था कि मुझे पास ही एक बनैला सुअर दिखायी पड़ा। मैंने बंदूक चलायी और एक बार में ही सुअर को मार डाला। उसी क्षण मेरे दिमाग़ में एक योजना आयी। लपक कर मैंने कुल्हाड़ी से झोपड़ी का दरवाज़ा चीर-फाड़ कर तोड़ डाला। फिर मरे सुअर को ले आया और भीतर मेज़ पर रख कर उसकी गरदन काटी। उसके खून को चारों ओर फर्श पर फैला दिया। फिर एक बोरे में पत्थर भर कर उसे ज़मीन पर इस प्रकार घसीटता हुआ बाहर लाया कि ज़मीन पर निशान बन जायें। उस बोरे को ले जा कर नदी

में फेंका। फिर मरे सुअर को भी नदी में बहाया। अब कोई भी आकर देखता तो समझता कि झोंपड़ी में किसी को मार कर घसीट कर नदी में फेंका गया है।

इसके बाद बड़े इतमिनान से मैंने नाव खोली और अपनी यात्रा आरंभ की। मेरी नाव बहाव के साथ तेज़ी से बढ़ चली।

मैं रात-भर नाव खेता रहा। सबेरा होने के पहले ही मुझे उस नदी के बीच में एक द्वीप दिखायी पड़ा। मैंने उधर ही नाव मोड़ दी। द्वीप के किनारे जा कर मैंने नाव बाँधी और ठण्डी घास पर लेट गया। मुझे नींद आ गयी।

जब मैं जागा तो दिन काफी चढ़ आया था। आज मैं पूरी तरह चिन्ता-मुक्त था। मैंने नाव को झाड़ी में छिपा रखा था। उस ओर से भी निश्चित था। मुझे फिर नींद आने लगी। नाश्ता करने का भी जी न हुआ। मैं फिर से सोने का विचार करने लगा। तभी मुझे तोप का गोला दाग़े जाने की आवाज़ सुनायी पड़ी। मैं जानता था कि नदी पर तोप के गोले छोड़ने से नदी के नीचे दबी लाश ऊपर आ जाती है। शायद मुझे मरा जान कर मेरी ही लाश खोजी जा रही थी।

मुझे बड़ा कौतूहल हुआ। मेरी लाश की तलाश हो रही है यह सोच कर ही मैं प्रसन्न हो उठा।

तभी देखा कि एक नाव मेरी ओर बढ़ी आ रही है। नाव पर कई लोग थे। दौड़ कर मैं झाड़ी में छिप गया। नाव धीरे-धीरे पास आ गयी। मैंने देखा कि नाव पर मेरे पिताजी, थेचर साहब, उनकी पत्नी, जो हारपर, टाम सायर, मौसी पोली, सिड और मेरी और बहुत-से पहचाने लोग थे। वे काफी पास आ गये। मुझे उनकी बातें भी सुनायी

पड़ने लगीं। वे सभी मेरी हत्या हो जाने के संबंध में ही बातें कर रहे थे।

धीरे-धीरे मेरे सामने से नाव गुज़र गयी। पर वे मुझे देख न पाये। नाव आगे निकल गयी। द्वीप कोई तीन मील लम्बा था। नाव आँखों से ओझल हो गयी पर बीच-बीच में तोप के गोले छोड़ने की आवाज़ आती रही।

मैं सोचने लगा—उनके लेखे मैं मर चुका हूँ। लाश की खोज से निराश हो कर वे सभी शांत हो जायेंगे। मैंने नाव पर से अपना सामान उतारा और जंगल के बीच जा कर लकड़ी गाड़ कर, रस्सी बाँध कर, कम्बल टाँग कर छोटा-सा तम्बू बनाया। फिर आग जला कर खाना पकाया और आज़ादी की साँस ली।

इस तरह तीन दिन और तीन रातें बीत गयीं। चौथे दिन मैं द्वीप की खबर लेने बाहर निकला। वहाँ कहीं कोई आदमी न था। अब मैं ही इस द्वीप का मालिक, राजा, बादशाह सब-कुछ था। वहाँ मुझे बेर, झरबेरी, करौंदें और अंगूर की लताएँ और पौधे मिले, सभी फलों से लदे। मैंने सोचा—चलो खाने का काम चल जायेगा।

इस प्रकार मैंने पूरे द्वीप का पूरा चक्कर लगाया। वापस आते समय एक भयानक साँप से भेंट हो गयी। तम्बू में वापस आया तो बुरी तरह थक गया था। जंगल में छिप कर मैंने आग जलायी और खाना पका कर खाया। तभी मुझे घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनायी पड़ी। ग़ौर से देखा तो सचमुच कई घुड़सवार थे। अब यह स्थान मुझे सुरक्षित न लगा। मैंने सारा सामान नाव पर लादा और चाँदनी रात में नाव खोल दी। फिर घंटों नाव पर ही भटकता रहा। अचानक एक जगह किनारे पर मुझे एक आदमी कंबल ओढ़े पड़ा मिला। उसके सिरहाने आग जल रही थी। उस आदमी का मुँह ढँका था। मैं झाड़ी में छिप कर बैठ गया, उसके उठने के इन्तज़ार में। सबेरा होने पर वह उठा। देखते ही मैं पहचान गया। वह मिस वाटसन का हबशी जिम

था। मैं झाड़ी से निकल कर उसकी ओर लपका। कहा, 'अरे जिम, तुम यहाँ कैसे ?'

मुझे देखते ही वह भय से काँपने लगा। घुटनों के बल बैठ कर हाथ जोड़ कर बोला, 'मुझे छोड़ दो। मुझपर दया करो। मैंने तुम्हारा कभी नुक़सान नहीं किया। मुझ ग़रीब को छोड़ दो, दुहाई है।'

बड़ी मुश्किल से मैं समझा पाया कि मैं भूत नहीं हूँ, मैं मरा नहीं हूँ।' फिर कहा, 'उठो जिम। चलो नाश्ता करें।'

वह चुप रहा। फिर पूछा, 'इस टापू में कब से हो ?'

मैंने कहा, 'जिस दिन मारा गया, उसी रात से।'

उसे साथ लेकर मैं नाव तक आया। उसने आग जलायी। मैंने खाना बनाया। जिम खूब भूखा था। खूब खाया उसने। बाद में उसने पूछा, 'उस झोंपड़ी में तुम नहीं तो और कौन मारा गया था ?'

मैंने जिम को सारा क़िस्सा बताया। फिर पूछा, 'अच्छा बताओ कि तुम यहाँ कैसे आये ?'

उसने बताया, 'मैं भाग आया हूँ। मेरी मालकिन मिस वाटसन अच्छा व्यवहार न करती थी। दिन रात कोंचती रहती थी। वह मुझे किसी दूसरे के हाथ बेचना चाहती थी, इसीलिए मैं भाग आया। मैं डोंगी से भागना चाहता था। लेकिन उसी दिन तुम्हारी हत्या की बात गाँव में पहुँची थी और गाँववाले डोंगी से तुम्हारी हत्या की जगह देखने जा रहे थे। मैं पैदल ही नदी के किनारे-किनारे चला। लेकिन कुत्तों के भूँकने के कारण पकड़े जाने का डर था। इतने में एक बेड़ा आता दिखा। मैं पीछे से बेड़े पर चढ़ गया। लेकिन इस टापू के पास आते ही एक आदमी ने मुझे देख लिया। छिप कर मैं उतर आया। तब से यहीं छिपा था।'

जिम को पा कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। एक से दो भले।

उस दिन खूब जाँच-पड़ताल के बाद द्वीप के बीच में चालीस फीट की ऊँचाई का एक टीला दीखा। उसमें एक गुफा बनी थी। रहने

लायक़ जगह। भीतर अच्छी ठंडक।

नाव को सामने ला कर बाँधा और सामान गुफा में ले आये। वहाँ घर की तरह सामान फैलाया। फिर आग जला कर खाना बनाया। खाया। आराम से रहने लगा।

नदी में ज़ोरों की बाढ़ आयी। उसी बाढ़ में एक दिन लकड़ी का एक घर बहता आ गया। उसे रोक कर उसमें से हमने पलंग, मेज, कुर्सियाँ आदि सामान निकाले। इस तरह हमारे पास खूब सामान हो गया।

एक दिन हम मैदान में बैठे थे। मैं तंबाकू लेने गुफा में गया, वहाँ देखा कि जिम के कंबल के पैताने एक साँप कुंडली मारे बैठा है। मैंने साँप को मार डाला और उसी पर कुंडली लगा कर वहीं रख दिया ताकि देख कर जिम डरेगा तो मज़ा आयेगा।

रात को आकर जिम कम्बल में घुस कर लेट गया। जब मैं आया और रोशनी जलायी तो देखा कि वहाँ साँप की मादा फन फैलाये बैठी है। मैं कुछ करता इसके पहले ही नागिन ने जिम के पाँव में काट लिया। जिम चीख पड़ा और पाँव पकड़ कर कूदने लगा। मैंने लाठी की मार से साँपिन को मार डाला। जिम लपक कर शराब के पीपे से चुल्लू भर-भर कर शराब पीने लगा। फिर कहा, 'इसका सिर काट कर फेंक दो और इसके शरीर का गोश्त पका कर मुझे दो। इससे ज़हर नहीं चढ़ेगा।'

जिम ने शक्ति-भर शराब पी। ज़हर पूरा नहीं चढ़ा। वह बच गया। पूरे चार दिनों बाद वह अच्छा हुआ। फिर पहले की तरह दिन बीतने लगे।

इसी प्रकार वहाँ काफी दिन बीत गये। वहाँ की नीरस ज़िन्दगी से मेरा जी ऊब गया था। मेरा विचार नदी के पार जा कर देख-भाल कर आने को हुआ। जिम ने विरोध तो न किया पर सलाह दी कि मुझे दिन में नहीं, रात को जाना चाहिए। बाद में उसने कहा कि

लड़की के भेष में जाओ। सतर्क रहोगे तो कोई न पहचानेगा। जिम ने ही काँट-छाँट कर लड़की के कपड़े बनाये। मुझे सचमुच लड़की बना दिया।

रात होते ही मैं नाव लेकर निकल पड़ा। थोड़ी देर में नाव गाँव के किनारे लगी। पास ही एक झोंपड़ा था, जिसमें दिया जल रहा था। वहाँ जा कर मैंने खिड़की से भीतर झाँका। लगभग चालीस वर्ष की एक औरत मोमबत्ती की रोशनी में बुनाई कर रही थी। उसका चेहरा अपरिचित था। लगा, यह गाँव में शायद नयी आयी है। हो सकता है इसी से मुझे गाँव का वह सब हाल मिल जाये जो मैं जानना चाहता था। मैंने दरवाज़े पर दस्तक की। मन ही मन याद करता रहा कि मैं लड़की हूँ।

'भीतर आओ।' औरत ने कहा।

मैं अन्दर गया तो बोली, 'बैठ जाओ।'

मैं एक कुर्सी पर बैठ गया। थोड़ी देर मुझे ग़ौर से देख कर उसने पूछा, 'तुम्हारा नाम ?'

'सारा विलियम्स।'

'क्या यहीं पड़ोस में रहती हो ?'

'नहीं, यहाँ से सात मील दूर हूकर विले गाँव में। सारा रास्ता पैदल ही आयी हूँ। थक गयी हूँ।'

'भूख लगी है ?'

'नहीं। मेरी माँ घर में बीमार पड़ी है। हम ग़रीब हैं। मामा को खबर देने आयी हूँ। एबनेट मूर उनका नाम है। मैं उनका घर नहीं जानती। क्या बता सकेंगी ?

'नहीं, यहाँ आये मुझे अभी केवल दो हफ़्ते हुए हैं। मैं यहाँ ज़्यादा लोगों को नहीं जानती। कस्बा काफी बड़ा है। अब इतनी रात को कहाँ जाओगी ? यहीं ठहर जाओ।'

'नहीं, नहीं, मुझे डर नहीं लगता। थोड़ा सुस्ता कर चली

जाऊँगी ।'

'लेकिन मैं तो नहीं जाने दूँगी । अभी थोड़ी देर में मेरे पति आ जायेंगे तो उनके साथ भेज दूँगी ।'

बातचीत आगे बढ़ने पर वह मेरे खून के बारे में बताने लगी । तब मैंने पूछा, 'आखिर उसका खून किसने किया ? मैंने भी अपने गाँव में इस हत्या के बारे में काफी सुना है । लेकिन यह कोई नहीं जानता कि किसने खून किया है ।'

'यहाँ भी किसी को ठीक नहीं मालूम । कुछ लोगों का खयाल है कि बूढ़े फिन ने अपने बेटे को मार डाला है ।'

'लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है ?'

'लोगों का शुरू में यही खयाल था और लोग उसे ज़िन्दा जला देना चाहते थे । लेकिन बाद में सबों की राय हुई कि एक भगोड़े हबशी ने ही यह खून किया होगा । वह हबशी उसी दिन भागा जिस दिन हकफ़िन की हत्या हुई । उसे पकड़ने वाले को तीन सौ डालर इनाम देने की भी घोषणा हुई है । और दो सौ डालर इनाम बूढ़े फ़िन को पकड़वाने वाले को दिये जायेंगे । बात यों है कि बूढ़े फ़िन ने दूसरे दिन सवेरे आकर बताया कि हकफ़िन की हत्या हो गयी है । वह लाश की तालाश में नाव के साथ-साथ गया भी था । फिर रात में ही कहीं भाग गया । लोगों को उसी पर शक हुआ । दूसरे ही दिन पता चला कि वह हबशी भी ग़ायब है । बस लोगों ने उसे ही हत्यारा मान लिया । बाद में बूढ़ा फ़िन लौट आया और बुरी तरह जज थेचर के पीछे पड़ गया कि रुपये दो तो हत्यारे हबशी को खोज निकालूँ । जज ने कुछ रुपये देकर ही अपना पिण्ड छुड़ाया । फिर वह जो गया तो दुबारा न आया । अब लोगों का ख़याल है कि यह सब बूढ़े फ़िन की ही चाल थी । हत्या उसी ने की है । लोगों का यह भी ख़याल है कि अभी साल-डेढ़ साल वह कहीं छिपा रहेगा और जब यह मामला ठंडा हो जायेगा तो आ कर जज थेचर को तंग कर के रुपये वसूलेगा । सचमुच वह बड़ा शैतान है । पैसे के

लिए कुछ भी कर सकता है।'

'तब तो अब लोग हबशी को हत्यारा न समझते होंगे।'

'कोई निश्चित कुछ नहीं कह सकता। लोगों का ख़याल है कि वह जल्दी ही पकड़ा जायेगा और तब सत्य का पता चलेगा।'

'तब तो लोग बेकार उसके पीछे पड़े हैं।'

'तुम बड़ी नासमझ हो। तीन सौ डालर की रक़म कोई कम नहीं है। लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि हबशी कहीं दूर नहीं गया, पास ही कहीं छिपा है। मेरा पड़ौसी आज ही बता रहा था कि पास वाले जेकसन टापू में कोई नहीं रहता, लेकिन चार-पाँच दिन पहले मैंने खुद टापू के इधर वाले भाग से धुँआ उठते देखा था। मेरा मन कहता है कि वह हबशी वहीं कहीं छिपा है। मैंने अपने पति को वहाँ देखने के लिए जाने को कहा है। वे एक आदमी के साथ अभी दो घण्टे पहले ही उसे देखने गये हैं।'

इतना सुनते ही मैं बुरी तरह घबड़ा गया। अपनी घबड़ाहट छिपाने को मैंने मेज़ पर से सूई-धागा उठा लिया और सूई में धागा डालने लगा। मेरे हाथ बुरी तरह काँप रहे थे। वह औरत मेरी ओर देख कर जाने क्यों मुस्करा रही थी। मैं फिर घबड़ाया। मैंने उसे बातों में उलझाने के लिए कहा, 'सचसुच तीन सौ डालर बहुत बड़ी रक़म है। क्या आप के पति आज रात ही वहाँ जा रहे हैं?'

'हाँ, अभी वे एक आदमी के साथ गाँव में नाव का इन्तजाम करने गये हैं। किसी से एक बन्दूक भी माँगेंगे। फिर आधी रात के बाद जायेंगे।'

'रात में भला क्या दिखेगा। दिन में जाना चाहिए।'

'तुम सचमुच नासमझ हो। दिन में तो हबशी भी देख सकेगा कि कौन उधर आ-जा रहा है। रात को तो सोया पड़ा होगा। आग-वाग जला ही रखी होगी।'

तभी मुझे फिर ग़ौर से देख कर उस औरत ने पूछा, 'बेटी क्या

नाम बताया था अपना ?'

'मेरी विलियम्स ।'

नाम बताने के झट बाद याद आया कि पहले तो मैंने नाम बताया था सारा विलियम्स। घबड़ाहट के मारे मेरा बुरा हाल था। चेहरे का रंग उड़ गया। तभी उस औरत ने कहा, 'बेटी, पहले तो सारा बताया था।'

'जी हाँ, मेरा पूरा नाम है—सारा मेरी विलियम्स। कुछ लोग मुझे मेरी कहते हैं, कुछ लोग सारा।'

कह कर मैंने बात तो बना ली लेकिन अब वहाँ तनिक भी रुकना मेरे लिए कठिन हो रहा था।

थोड़ी देर की खामोशी के बाद उस औरत ने मुस्करा कर पूछा, 'अच्छा अब सच बताओ, तुम्हारा असली नाम क्या है ? झूठ मत बोलना। बताओ कि तुम बिल हो या टाम हो या बाब हो ?'

मैं घबड़ाहट के मारे काँपने लगा। समझ में न आया कि क्या करूँ ? उसने फिर कहा, 'डरो मत। साफ-साफ बताओ। तुम्हारा असली नाम क्या है ? मुझ पर विश्वास करो। मैं किसी से कहूँगी नहीं। बल्कि तुम्हारी मदद करूँगी। अच्छे लड़के की तरह सच-सच बता दो। छिपाना मत, न झूठ ही बोलना।'

मुझे लगा कि मैं रंगे हाथों पकड़ लिया गया हूं। लड़की बनने का मेरा ढोंग नहीं चला। मैंने विवश होकर कहा, 'मैं अब आप से कुछ भी न छिपाऊंगा लेकिन किसी से कहियेगा मत।' फिर मैंने एक मनगढंत कहानी उसे सुना दी—माँ-बाप मेरे मर चुके हैं। मैं एक कमीने और शैतान किसान के यहाँ नौकर हूँ। वह मुझे बहुत सताता है। उसी की लड़की के कपड़े चुरा कर मैं भागा हूँ और लड़की बन कर भटक रहा हूँ। दिन-भर छिपा रहता हूं और रात को चलता हूँ। अब मामा के पास मदद और आश्रय के लिए जा रहा हूँ।' कह कर मैं जाने के लिए उठने लगा। तब उस औरत ने कहा, 'तुम लड़की का यह भेष बदल डालो।

तुम लड़की नहीं बन सकते। सूई में डोरा डालने के तुम्हारे प्रयास से ही मैं समझ गयी कि तुम लड़की नहीं लड़का हो। लोग यदि तुम्हें यों देख लेंगे तो मुसीबत होगी।'

उससे शिक्षा ग्रहण करके मैं बाहर आया। और सिर पर पाँव रख कर भागा। जल्दी से नाव खोली और भाग चला। मैं साँस रोके नाव खेता जा रहा था। टापू तक पहुँचते-पहुँचते मेरी साँस फूलने लगी थी। मैं सीधा अपनी गुफा में पहुँचा जहाँ जिम गहरी नींद सो रहा था। उसे जगा कर मैंने कहा, 'जिम उठो। यहाँ से भागने की तैयारी करो। एक मिनट भी देरी मत करना। हमें पकड़ने वाले पीछे-पीछे आ रहे हैं।'

जिम ने जल्दी-जल्दी सारा सामान नाव पर लादा। जल्दी ही नाव खोल दी। हम दोनों नाव पर चुपचाप थे। चारों ओर सन्नाटा था।

मैं सोच रहा था कि यदि जिम की खोज में आये लोग गुफा तक पहुँच भी गये होंगे तो वहाँ जिम के आने की रात-भर प्रतीक्षा करेंगे।

सवेरा होने पर हम लोग एक जंगल में पहुँचे और वहीं रुक गये। मैंने जिम से रात को औरत से हुई बातें बतायीं। जिम खुश था कि समय से ख़बर मिल गयी और हम लोग बच निकले।

अगली रात को हम लोग क़रीब चार मील प्रति घंटे की चाल से नाव खेते हुए चलते रहे। इस प्रकार दिन-भर छिपते और रात-भर चलते। पाँचवीं रात जब हम सेंट लुई के सामने से गुज़रे तो लगा कि दुनिया-भर की बिजली वहीं जमा कर दी गयी है। लेकिन सेंट लुई के आगे बढ़ते ही हम भयानक तूफान में फँस गये। भयानक ग़रज के साथ भीषण वर्षा हुई। चारों ओर पानी ही पानी था। घोर अंधकार भी छा गया। बस-जब बिजली चमकती तो थोड़ा-सा दिख जाता।

ऐसी ही बिजली की क्षणिक चमक में मैंने देखा कि एक चट्टान से टकरा कर एक अगनबोट उलटा पड़ा है। मैंने जिम से कहा, 'चलो उसे देखें।'

जिम ने विरोध किया, 'उस टूटे अगनबोट के भीतर जाने की बात तो दूर रही मैं तो उसके पास भी नहीं जाने दूँगा। बिना मतलब मुसीबत बुलाने का क्या मतलब है ?'

तब मैंने समझाया,' अब वहाँ भला कौन होगा ! चलने से हो सकता है कि हमें अपने मतलब का कुछ सामान मिल जाये। कुछ न होगा तो कप्तान के कमरे में सिगार तो होंगे, बढ़िया वाले सिगार। क्या पता कुछ नगदी भी हाथ आ जाये।'

बड़ी भिन्नत के बाद जिम तैयार हुआ। जेब में मोमबत्तियाँ डाल कर उठ खड़ा हुआ।

आगे बढ़ कर हमने अपनी नाव उसी अगनबोट के क्रेन से बाँध दी। फिर पटरों के सहारे ऊपर चढ़े। कप्तान का कमरा सामने ही था। उसका दरवाज़ा भी खुला था। लेकिन अगले ही क्षण हमने आश्चर्य से देखा कि बीच वाले हाल में रोशनी जल रही थी और वहाँ से लोगें के धीमे स्वर में बोलने की आवाज़ आ रही थी। जिम ने मेरे कान में फुसफुसा कर कहा, 'आगे खतरा है, लौट चलो।'

'अच्छा' कह कर मैं लौटने ही वाला था कि एक रुआँसी आवाज़ सुनाई दी—'मुझ पर दया करो ! मैं कसम खाता हूँ कि कभी किसी से नहीं कहूंगा।'

तभी डरती हुई एक दूसरी आवाज़ सुनायी पड़ी—'तेरी सभी कसमें झूठी हैं, जिम टर्नर ! तेरी बात का क्या भरोसा ? लूट के माल में हमेशा तुझे ज़्यादा ही चाहिए और ऐसे ही डरा-धमका कर तू हमेशा दूना माल ले लेता है। हमेशा भेद खोलने की धमकी ? जा भेद खोल दे। इस बार पकड़ा गया है, कमीने, झूठे, बेईमान !'

मैंने मुड़ कर देखा तो जिम जा चुका था। मेरी उत्सुकता बढ़ती

जा रही थी। हिम्मत करके मैं उजाले की ओर बढ़ा। जब मैं हाल में पहुँचा तो देखा कि एक आदमी ज़मीन पर पड़ा है जिसके हाथ-पाँव बँधे हैं और दो आदमी उसके पास खड़े थे। एक के हाथ में लालटेन थी और दूसरा पड़े आदमी पर पिस्तौल ताने खड़ा था।

पहुँचते ही मैंने सुना कि पिस्तौल वाले ने कहा, 'जी चाहता है कि इस नीच और कमीने को गोली मार दूँ। बेईमान कहीं का !'

नीचे पड़े व्यक्ति ने घिघिया कर कहा, 'बिल, मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ। इस बार बख्श दो। कसम खाता हूँ। विश्वास करो। कभी किसी से नहीं कहूँगा।'

इस प्रकार यह झंझट देर तक होती रही। नीचे पड़े आदमी को रोता-कलपता देख कर लालटेन लिये व्यक्ति ने हँस कर कहा, 'देखो, कैसा घिघिया रहा है ! और बँटवारे के समय कैसी आँखें दिखाता था। अब सारी अकड़ निकल गयी। अगर इसे क़ाबू में न किया होता तो यह हम दोनों को ही मरवा देता। बराबर का हिस्सा भी यह नहीं देना चाहता था। भेद खोलने की धमकी देता था। जान, अब भेद खोल दे ! अच्छा बिल, पिस्तौल हटा लो।'

'नहीं जैक, मैं इस कमीने कुत्ते को नहीं छोड़ूँगा।'

'लेकिन मेरी बात तो सुनो पहले। अब इसे मारते भला क्या देर लगेगी ?''

'क्या है ?'

'मेरे साथ इधर आओ।' कह कर वह साथी को लेकर उसी ओर बढ़ा जहाँ मैं छिपा था। मैं भाग कर गोदाम में घुस गया और एक ख़ाली बर्थ पर चुपचाप लेटा रहा। ये दोनों गोदाम में ही घुस आये और बिलकुल मेरे क़रीब खड़े होकर राय करने लगे। डर कर मैंने साँस रोक ली ताकि साँस की आवाज़ से वे मुझे पकड़ न लें।

बिल ने कहा, 'वह भेद खोलने की धमकी दे चुका है। अगर बच गया तो वह मानेगा नहीं। ऐसे आदमी पर दया दिखाना मूर्खता है।

उसे मार ही डालना चाहिए।'

'खत्म तो मैं भी उसे कर देना ही चाहता हूँ। पर मेरी पूरी बात तो सुन लो। अगर गुड़ देने से कोई मरे तो ज़हर क्यों दें? हम तो चाहते हैं कि ऐसा मारो कि इस ख़तरे से बचे रहें। मेरी मानो तो यहाँ जो सामान है सब ले चलो और इसे इसी तरह बँधा पड़ा रहने दो। घंटे-दो घंटे में यह बोट डूब ही जायेगा। साथ ही यह भी डूब मरेगा।'

दूसरे ने सलाह मान ली। दोनों फिर उसी ओर चले गये जहाँ से आये थे। मैंने मौक़ा देख कर जिम को धीरे से पुकारा। उसने बग़ल से ही बहुत निराश और कराहती आवाज़ में उत्तर दिया।

मैंने कहा, 'जिम चलो, इन बदमाशों की नाव हम लोग खोल कर बहा दें और अपनी नाव से भाग चलें।'

जिम ने रोनी आवाज में कहा 'लेकिन अपनी नाव अब कहाँ है। रस्सी टूट गयी और अपनी नाव बह गयीं। अब ती हम भी बुरे फँसे।'

सुनते ही मेरी साँस रुक गयी। 'अपनी नाव गयी, सब सामान भी गया। अब हम तो बरबाद हो गये।'

फिर भी हिम्मत बाँध कर हम दोनों ने मिल कर इन बदमाशों की नाव खोज ली और उस पर सवार होने जा ही रहे थे कि दोनों बदमाश खिड़की की राह निकल आये। बोरी और गठरी नाव पर रखी और नाव पर सवार हो गये। वे नाव खोलने ही वाले थे कि एक ने कहा, 'उसकी तलाशी ले ली थी न?'

'नहीं तो। क्या तुमने भी नहीं ली?'

'नहीं तब तो उसके हिस्से का रुपया उसके ही पास होगा। उसे भी क्यों छोड़ा जाये?'

और झटपट दोनों कूद कर फिर भीतर चले गये।

मौक़ा देख कर और एक क्षण देरी किये बिना ही मैं नाव पर चढ़ गया। जिम भी आ गया। चाकू से रस्सी काटी और नाव सर्र से बह चली। और देखते-देखते हम अगनबोट से काफी दूर आ गये।

उन बदमाशों को चकमा देकर मैं बहुत खुश हुआ। जिम भी इतनी दौलत पाकर फूला न समा रहा था। आगे चल कर हमारी नाव भी सामान के साथ बहती मिल गयी। हमारा सारा दुख जाता रहा।

धीरे-धीरे सवेरे का उजाला फूटने लगा। हमने एक टापू में डेरा डाला। नावों को छिपा दिया और जंगल में जाकर ऐसे सोये कि तन-वदन की सुध ही न रही। खूब गहरी सींद हम लोग सोये।

उसने पर हमने लूट के माल की जाँच शुरू की। जूते, कपड़े, कम्बल और बहुत-सा सामान था। किताबें, दूरबीन और सिगार के डिब्बे। इतना सामान! हम तो मालामाल हो गये।

एक दिन आराम करके हर आगे बढ़े।

अगर हम लोग तीन रात चलते तो कैरो पहुँच जाते। यहीं पर ओहियो नदी मिलती है। हगने सोचा था कि वहाँ पहुँच कर हम अपना सब कुछ वेच देंगे। फिर ओहियो के रास्ते 'फ्री स्टेटस' में पहुँच जायेंगे।

लेकिन दूसरी रात ही एक मुसीबत आयी। हम चलते जा रहे थे। अचानक कुहरा होने लगा। कुहरा इतना बढ़ गया कि किनारा तक न समझ आया जहाँ नाव बाँधते। तभी तेज़ धारा का एक ऐसा झटका लगा कि पुरानी नाव पर बैठा जिम और नयी नाव पर मैं, दोनों दो दिशाओं में नाव सहित बह गये। देखते-देखते दोनों कुहरे में समा गये। पता नहीं दोनों ओर किस, किधर वहे जा रहे थे। मैं शक्तिभर चिल्लाया ताकि जिम जवाब दे तो पता लगे। क़रीव आधे घंटे मैं चिल्लाता रहा तव एक ओर से जिम का उत्तर आया पर मैं यह न समझ पाया कि किधर से आवाज़ आयी। हमारी नाव नाच रही थी। बाद में फिर एकाध वार आवाज़ आयी। लेकिन इस वार यह न जान पाया कि यह जिम की आवाज़ है या किसी और की।

मैं परेशान जिधर नाव जाती वहता रहा। अब मैं पूरी तरह

तीन-चार बार मैं रेतीले किनारों से टकराते-टकराते बचा। अगर ज़रा-सा भी ध्यान चूक जाता तो गया था। मैं बुरी तरह थक गया था। निराश मैं अपने को क़िस्मत के आसरे छोड़ कर नाव पर लेट गया। सोने का इरादा न था पर जाने कब नींद आ गयी।

पता नहीं मैं कब तक सोता रहा। जब आँख खुली तो कुहरा छँट गया था और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। नदी का पाट खूब चौड़ा और दूर तक फैला था। तभी दूर पर मुझे एक कालासा धब्बा दिखायी पड़ा। लपक कर पास पहुँचा तो देखा कि सिर्फ कुछ लट्ठे बह रहे हैं। फिर दूसरा धब्बा दिखा। वह भी लट्ठे ही थे। तीसरी बार ज़रा दूरी पर बड़ा धब्बा दिखा। उधर लपका। पर वाह रे भाग्य ! अपनी ही नाव थी।

मन खुशी से नाच उठा। पास जा कर देखा तो घुटनों में सिर गाड़े जिम ऊँघ रहा था। मैं अपनी नाव पर कूदा। जिम घबड़ा कर उछल पड़ा। मुझे देख कर ईश्वर को धन्यवाद देने व प्रार्थना करने लगा।

फिर हम लोगों ने नावों की सफाई की। रास्ते में एक टापू पर एक दिन आराम भी किया।

दिन-भर हम सोये रहे। रात को फिर यात्रा शुरू की।

इस बार हम लोग एक विशालकाय बेड़े के पीछे-पीछे चले। वह बहुत बड़ा बेड़ा था।

नदी के एक बड़े मोड़ में हम चले जा रहे थे। एकाएक बादल घिर आये और मौसम बहुत गरम हो गया। हम दोनों कैरो के बारे में बातें कर रहे थे। हम लोग कैरो को पहचानेंगे कैसे ? आखिर एक तरकीब सूझी कि कहीं कोई रोशनी दिखायी दे तो वहाँ अपना काल्पनिक परिचय देकर राह पूछी जाये।

घंटों के बाद एक रोशनी दिखायी दी। जिम चीख़ पड़ा—'वह रहा कैरो !'

मैं दूसरी नाव लेकर चल पड़ा। मैं करीब पचास गज़ गया हूँगा कि एक डोंगी ग्राती दीखी। उसमें दो ग्रादमी थे। दोनों बंदूकधारी। मैं रुक गया। वे भी पास ग्राकर रुके। एक ने पूछा, 'वहाँ क्या है ?

'हमारी नाव।'

'कितने ग्रादमी हैं ?

'सिर्फ एक हवशी ?'

'ग्राज पाँच हवशी भागे हैं। तुम्हारा गोरा है या काला !'

मैं सोचने लगा। यह क्या मुसीबत ग्राई ! क्या ये लोग जिम को भी पकड़ ले जायेंगे ? फिर हिम्मत करके बोला, 'गोरा।'

एक ने कहा, 'हम चल कर देखेंगे।'

मैंने रूपक बाँधा, 'ठीक है, खुशी से चलिये। ग्राप चलेंगे तो हमारी नाव को खींच कर किनारे लगा देंगे। मेरे पिताजी बीमार हैं। माँ भी ग्रौर मेरी भी।'

उन्हें नाव बहाते देख मैं बोला, 'पिताजी ग्रापको देख कर बड़े प्रसन्न होंगे।'

'क्या हुग्रा है तुम्हारे बाप को ?'

'जी...जी...एक ऐसी ही बीमारी है।'

'सच-सच बताग्रो। क्या बीमारी है ? झूठ मत बोलना।'

'मैं सच ही कहूँगा। पर कहूँगा तो ग्राप फिर नहीं चलेंगे। ग्राप चलिये ज़रूर। दूर ही रहियेगा। छुइयेगा मत।'

'मैं समझ गया। तेरे बाप को चेचक है न ! यह बात छिपायी क्यों ? क्या दुनिया-भर में चेचक फैलायेगा ?"

'जी, पहले जिसे भी बताया, सुन कर कोई मेरी मदद को नहीं गया।'

'सुन कर दया तो ग्राती है पर क्या ग्रपने को भी चेचक लगा लूँ ? इधर मत रुको। कम से कम बीस मील दूर जाकर रुकना। ग्रौर मेरी ग्रोर से ये रुपये लो।' कह कर बीस डालर नाव के तख्ते पर रख कर

कहा, 'इससे इलाज कराना। भगवान सब ठीक करेगा। तुम्हें अगर भगोड़े हवशी दिखायी दें तो हमें खबर देना। और इनाम मिलेगा।'

मैंने चुपचाप दोनों को सलाम किया और डालर उठा कर जेब में रखे। वे अपने रास्ते चले गये और मैं जिम के पास वापस आया। वहाँ देखा कि नाव की छत पर छिपकली की तरह चिपका जिम पड़ा था। बोला, 'मैंने उनकी बातें सुन ली थीं। इसी से छिप गया।'

दूसरे दिन सवेरे हमने नाव किनारे लगायी। जिम ने नाव को खूब छिपा दिया था। वहाँ पता लगाया तो पता लगा कि वहाँ कैरो नहीं था। हम बैठ कर सोचने लगे कि अब क्या किया जाये!

अन्तहीन यात्रा का यह जीवन अपने ढंग से चल रहा था। बीच-बीच में जो घटनाएँ हो जाती थीं उनसे नीरसता नहीं होने पाती थी। लगता था कि समय चुपचाप, बिना विघ्न-बाधा के, बिल्कुल सहज और सुखद ढंग से उड़ता जा रहा था। नदी का पाट कहीं टेढ़ा और कहीं खूब चौड़ा था। हम रात ही रात में चलते और दिन में नावों को छिपा देते। खुद भी दुबके व छिपे रहते। उधर रात खतम होने पर आती इधर हम ठहर जाते। जंगली पेड़ों की शाखों, टहनियों व पत्तों को काट कर नावों को ढँक देते। मछली पकड़ने की बंसी बनाते। इन कामों से छुट्टी पा कर नदी में खूब नहाते और अपनी थकान मिटाते। फिर हल्की-सी आग जला कर नाश्ते के लिए मछलियाँ भूनते। फिर गहरी नींद सोते। जब भी नींद खुलती खाना बनाते और फिर सोते और दिन खतम होते ही फिर नाव खोल देते और अनन्त की ओर बढ़ने लगते।

जिम बातूनी तो था ही। धर्म आदि से लेकर भूत-प्रेत और गरीबी-अमीरी तक की बातें करते यात्रा का समय काटते। रात में एक-दो बार नदी पर अगनबोट आते-जाते देखते।

एक दिन सवेरे मुझे घूमने की सनक सवार हुई। मैं एक नाव ले कर एक नाले में घुस गया। चलते-चलते एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ एक पगडण्डी नाले के पार जाती थी। वहाँ मुझे पगडण्डी पर दो आदमी भागते हुए आते दिखायी पड़े। मुझे डर लगा कि इस बार ज़रूर पकड़ा जाऊँगा। मैं अपने बचाव का रास्ता खोज ही रहा था कि वे दोनों बहुत पास आ गये और मुझे देख कर घिघिया कर बोले, 'हमें बचा लो, बचा लो! हम बेकसूर हैं। फिर भी लोग पीछे पड़े हैं। कुत्ते साथ लेकर पीछा कर रहे हैं। बचा लो हमें!'

वे घबराहट में शायद मेरी नाव में कूद कर चढ़ने ही वाले थे कि मैंने कहा, 'ठहरो! इस नाव पर नहीं। इन झाड़ियों में छिपते हुए नाले के किनारे कुछ दूर चले जाओ। वहाँ नाव पर चढ़ना।'

मेरी राय मान कर वे झाड़ी से होकर भागे। मैं भी नाव घुमा कर अपनी नाव की तरफ भागा। थोड़ी देर में दोनों भागते हुए हमारी नाव तक आ गये। उनमें एक आदमी की उम्र सत्तर वर्ष के लगलग थी और उसका सिर गंजा था। दूसरा तीस के लगभग था।

सबों ने साथ ही नाश्ता किया। लेट कर बातें करने लगे। उनकी बातों से पता चला कि वे दोनों भी आपस में अपरिचित थे।

कम उम्रवाला दाँतों की मैल साफ करने की दवा बेचता था। उस की दवा से दाँत ख़राब हो जाते थे। वह एक गाँव में एक दिन से अधिक ठहरता न था। रातोंरात दूसरे गाँव पहुँच जाता। इस गाँव में वह रात भी रह गया था। और सवेरे ही गाँव वालों ने उसे पकड़ने का आयोजन किया। जब वह भागने की फिक्र में था तभी यह बूढ़ा भी उसके साथ लग गया। यह बूढ़ा उपदेशक था। गाँव-गाँव घूम कर शराबबन्दी पर भाषण देता था और हर सुनने वाले से दस सेंट वसूलता था। इस प्रकार पाँच से दस डालर रोज कमाता था। कल रात जाने लोगों को कैसे पता लग गया कि भाषण तो इतना देता था और एकान्त में खुद खूब शराब पीता था। इसीलिए गाँव वालों की पकड़ में आने के पहले ही वह भाग

निकला था ।

पता लगा कि युवक अखबार भी छापता था । दवाइयाँ भी बेचता था । नाटक-नौटंकी भी करता था । जादू भी दिखाता था । गाना भी गाता था । भाषण व गप्प अच्छी कर लेता था ।

गंजा भी खूब हुनर वाला था । असाध्य रोगों का इलाज करता था । सुधार के लिए उपदेश देने, धर्म सभाएँ करने और सेवा करके मेवा खाने में वह खूब माहिर था ।

दोनों आपस में खूब डींगे हाँक रहे थे कि युवक ने ठंडी साँस ले कर कहा, 'हाय री तक़दीर !'

'क्या हुआ ?' गंजे ने पूछा ।

'अपनी दुर्गति की बात सोच रहा हूँ । क्या था, क्या हो गया ! मैंने अपने हाथों अपनी यह दशा बनायी है । मैं क्या हूँ ? आज कोई सोच भी नहीं सकता कि मैं पैदाइशी ड्यूक (नवाब) हूँ ।'

सुन कर मेरी और जिम की झपकी ही टूट गयी ।

युवक कहता गया, 'मेरे परदादा ब्रिजवाटर के ड्यूक के बड़े बेटे थे । मेरे पिता के दादा यहाँ आकर बसे थे । यहीं शादी की और एक विधवा और अनाथ बच्चे को छोड़ कर मर गये । तब से हमारा रुतबा जाता रहा । और अब मेरी यह दशा हो गयी है ।'

मुझे भी और जिम को भी उस पर दया आयी । लेकिन गंजा भी चुप न रहा, बोला, 'अकेले तुम्हारे साथ ही किस्मत ने दग़ा नहीं की है । मेरी भी ऐसी ही कहानी है । मैं डालिफन हूँ । सोलहवें लुई का बेटा, सत्रहवाँ लुई, राजकुमार डालिफन । फ्रांस के राज्य का असली उत्तराधिकारी ।'

जिम को दोनों राजपुरुषों पर बड़ी दया आयी और वह उनके सामने इज्ज़त से झुक गया लेकिन मैं समझ गया कि दोनों महान गप्पी और झूठे हैं । धोखेबाज़ और कपटी भी । लेकिन यह बात मैंने जिम से नहीं कही ।

उन्होंने मेरे बारे में भी खोद-खोद कर पूछना शुरू किया । तब मैंने भी अपने सम्बन्ध में एक कहानी घड़ कर सुना दी कि मेरा परिवार

मिसौरी का है। मेरे परिवार में सभी मर गये हैं । सिर्फ बाप हैं जो बहुत ग़रीब हैं।

रात को हम फिर रवाना हुए। हम पर ड्यूक ग्रौर गंजे राजा का काफी प्रभाव पड़ चुका था। रात-भर दोनों राजपुरुष ताश खेलते रहे ग्रौर मैं व जिम नाव खेते रहे।

बीच-बीच में ऊबते तो राजा ग्रौर ड्यूक गप्पें हाँकने लगते। एक बार ड्यूक ने कहा, 'नाटक-नौटंकी खेलने में जो मज़ा है वह किसी में नहीं। यह दुनिया का सबसे मज़ेदार फ़न है। मैं कोई ग्रच्छा कस्बा, जो भी रास्ते में पड़ेगा वहीं 'रोमियों जूलियट' का खेल करूँगा ग्रौर जूलियट का पार्ट करूँगा।'

बीच-बीच में बातें करते हुए दोनों राजपुरुष एक-दूसरे को राज्योचित संबोधन से ग्रादर देते—जैसे श्रीमान, महाजाधिराज ग्रादि।

नदी के घुमाव से तीन मील की दूरी पर एक बहुत छोटा व ग़रीब कस्बा था। वहाँ नाव रोकी गयी। राजा, ड्यूक ग्रौर मैं कस्बे में गये। हमें कॉफ़ी खरीदनी थी, जो खत्म हो चुकी थी।

जब हम कस्बे में पहुँचे तो वहाँ भयानक सन्नाटा दिखा। सभी सड़कें व बाजार सूने। पता लगाने पर ज्ञात हुग्रा कि कस्बे के सभी मर्द ग्रौर ग्रौरत जंगल में हो रही एक धर्म-सभा में गये हैं। यह सुनते ही राजा ने वहाँ जाने का निश्चय कर लिया। ड्यूक भी किसी छापेखाने के फेर में दूसरी तरफ चला गया।

राजा के साथ मैं धर्म-सभा में गया। खूब भीड़ थी ग्रौर एक ऊँचे मंच पर खड़ा एक प्रचारक भाषण दे रहा था। मैं भीड़ में खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद जब मैंने घूम कर देखा तो पाया कि राजा जाने कब वहाँ से ग़ायब हो गया था। दूसरे ही क्षण मैंने उसे मंच पर चढ़ते देखा। वहाँ जाकर उसने प्रचारक से इजाज़त माँगी ग्रौर भाषण देने लगा। उसने बड़े मार्मिक ढंग से भाषण शुरू किया जिसका श्रोताग्रों पर गहरा ग्रसर हुग्रा। उसने कहा, 'मैं समुद्री लुटेरा था। पिछले तीन वर्षों

से मैं हिन्दमहासागर में लूटपाट करता था। मेरे हाथों जाने कितनी हत्याएँ हुई हैं। लेकिन आज ही मुझे ईश्वर के दर्शन हुए। मेरी ज़िन्दगी बदल गयी। अब मैं डाका न डालूंगा और दूसरे डाकूओं को भी सत्पथ पर लाने का प्रयास करूँगा। यही मुझे ईश्वरीय आदेश है। अब मैं घूम-घूम कर सारी दुनिया को बताऊँगा कि ईश्वर ही मानव जाति का मित्र और हितैषी है। जिसने मुझ जैसे अंधे की आँखें खोल दीं और अपनी अमृतवाणी से मेरी पापात्मा को शुद्ध किया है।' इस प्रकार उसने बहुत लम्बा और प्रभावशाली भाषण दिया जिसे सुन कर श्रोता भाव-विभोर हो गये और सबों ने उसके लिए चंदा इकट्ठा शुरू किया। मैं तो उसके भाषण के प्रभाव का यह चमत्कार देख कर दंग रह गया।

नाव पर लौट कर जब हमने चंदे से प्राप्त रक़म को गिना तो पाया कि सब मिला कर सत्तासी डालर और पचहत्तर सेंट इकट्ठे हुए थे। यही नहीं, आते समय राजा रास्ते से तीन कण्टर शराब भी उड़ा लाया था। इस आमदनी से हम बड़े खुश थे। ड्यूक पहले ही लौट आया था। उसे कस्बे में एक खाली पड़ा छापाखाना मिल गया था जिसमें उसने कई विज्ञापन छाप लिये थे। और उसने भी तिकड़म से साढ़े नौ डालर की कमाई कर ली थी।

प्रसन्नचित्त हम फिर आगे बढ़े।

अगले दिन हम जिस कस्बे में रुके वह बड़ा था और संपन्न भी। वहाँ सरकस हो रहा था और उस दिन अंतिम शो था। उसी स्थान पर ड्यूक ने नाटक करने का निश्चय किया। उसने गाँव के एक छापेखाने से एक दीवार-विज्ञापन छपवा कर कस्बे-भर में चिपकवा दिया। विज्ञापन इस प्रकार था—

आप के कस्बे के कोर्ट हाउस में सिर्फ तीन रातों के लिए

सारी दुनिया में एक्टिंग के लिए प्रसिद्ध कलाकार

डेविड गैरिक उर्फ छुट्टन

व

एडमण्ड कीन

लंडन और कांटिनेंटल थिएटर वाले

शाही कमाल

पेश कर रहे हैं।

टिकट दर सिर्फ ५० सेंट

औरतों और बच्चों को नहीं आने दिया जायेगा।

पूरे दिन ड्यूक और राजा 'स्टेज' बनाने, पर्दे बाँधने और 'फुटलाइट' लगाने में जुटे रहे। सभी आवश्यक चीज़ें उन्हें किराए पर मिल गयी थीं। रात होते ही लोग आने लगे। टिकटें बिकने लगीं और देखते-देखते 'हाउस-फुल' हो गया। तब ड्यूक ने स्टेज पर आकर भाषण देना शुरू किया। उसने नाटक की खूब तारीफ़ की। तब बाद में परदा उठा। राजा स्टेज पर आया। उसे मेकअप करके पूरा वनमानुस बना दिया गया था। उसने उछल-कूद कर दर्शकों को हँसाना शुरू किया। और घंटे-भर बाद जब उसकी उछल-कूद ख़त्म हुई तो पर्दा गिरा दिया गया।

कई दर्शक एक साथ चिल्ला उठे, 'क्या खेल ख़त्म हो गया ? यह तो हमें बेवकूफ बनाया गया है।'

लोग उत्तेजित होकर स्टेज तोड़ने के लिए बढ़े तभी एक लम्बा-सा आदमी सामने खड़ा होकर बोलने लगा—'भाइयो, शांत हो जाओ ! मेरी सुनो ! यह सच है कि हमें बेवकूफ बनाया गया। बड़ा धोखा दिया गया पर अब अपनी और हँसी मत कराइये। बाहर जाकर खेल की खूब तारीफ कीजिये और कहिये कि इसे हर आदमी को देखना चाहिए। मतलब यह कि जिस जाल में हम फँसे हैं, उसी में सारे कस्बे को फँसा दीजिये। जब सभी बेवकूफ बन जायेंगे तो किसी पर कोई न हँसेगा।'

लोगों को उसकी राय पसन्द आयी और अगले दिन सारे कस्बे में खेल की तारीफ़ ही होती रही।

दूसरे दिन भी पूरा हाल खचाखच भर गया। उस दिन भी दर्शक बेवकूफ बने। रात नाव पर लौट कर हमने खाना खाया। और ड्यूक व राजा की सलाह से नावों को दो मील आगे बढ़ा कर एक जगह पर छिपा दिया।

तीसरी रात को और ज्यादा भीड़ हुई। कहीं तिल रखने की जगह नहीं थी। शायद आख़िरी दिन था इसीलिए। मैं ड्यूक के साथ दरवाज़े पर खड़ा था। मैंने लक्ष्य किया कि हर आने वाले की जेबें फूली हैं और सभी अपने कोट के नीचे कुछ छिपाये हैं। साथ ही सड़े अंडों, आलू और गोभी की बदबू से नाक भी भरने लगी। जब हाल में सभी सीटें भर गयीं और लोगों के खड़े होने की भी जगह न बची तो ड्यूक ने भीड़ में से एक आदमी को खींच कर उसे चौथाई डालर पकड़ाते हुए कहा, 'भाई-जान! ज़रा मेरी जगह खड़े हो जाओ। मैं खेल शुरू कराने जा रहा हूँ।' वह सहर्ष खड़ा हो गया। मुझे इशारे से ड्यूक स्टेज के पीछे लिवा ले गया और धीरे से बोला, 'अब सिर पर पाँव रख कर भागो और नाव पर पहुँचो।'

हम दोनों जान बचा कर भागे। नाव पर पहुँच कर मुझे राजा के लिए चिन्ता हुई कि वह बेचारा बेकार ही फँस गया। वह बहुत पीटा जायेगा। लेकिन वह गंजा हमसे भी तेज़ था। नाव के कोने से निकल कर बोला, 'कहिये श्रीमान, ड्यूक साहब, आज का कैसा रंग रहा? मैं तो आज कस्बे में गया ही नहीं।'

अब हम लोग नाव खोल कर ताबड़-तोड़ भागे। लगभग दस मील हम चुपचाप निकल गये। तब फिर लालटेन जला कर खाना खाया। दोनों राजपुरुष आज अत्यधिक प्रसन्न थे।

राजपुरुषों की धूर्तता से तीन रातों में चार सौ-पैंसठ डालर इकट्ठे हुए थे। अब हम खूब मालामाल थे।

रात को जब दोनों राजपुरुष सो गये तो जिम ने कहा, 'क्यों हक, तुम्हें इन राजाओं के कारनामों पर अचरज नहीं होता?'

'नहीं।'

'क्यों, होना तो चाहिए।'

'सभी राजा ऐसे ही होते हैं। धूर्त न हों तो राजा कैसे बनें ?'

जिम चुप हो गया। वास्तव में उसे राजाओं का यह स्वरूप देख कर दुख हो रहा था। वह राजाओं को सचमुच महान व्यक्ति समझता था। और मैं अपने मुँह से यह कहना न चाहता था कि ये दोनों राजा नहीं, मक्कार, और धूर्त हैं।

दूसरे दिन, रात होने पर हमने नदी के बीच बने एक द्वीप पर डेरा डाला। यहाँ नदी के दोनों किनारों पर एक-एक गाँव था। राजा और ड्यूक ने गाँव वालों को ठगने की योजना बनानी शुरू की। राजा के मुक़ाबले ड्यूक ज़्यादा चलता पुर्ज़ा था। उसने फौरन ही एक उपाय खोज निकाला। उसने यहाँ भी नाटक का खेल दिखाने की योजना बनायी लेकिन डर था कि कहीं पिछले गाँव की खबर यहाँ पहुँच न गयी हो। अतः टोह लेने को गाँव में जाने का निश्चय किया गया।

पिछले पड़ाव में हमने सबके लिए नये सिले-सिलाये कपड़े खरीदे थे। वही नये कपड़े पहन कर खूब सज-धज कर हम लोग चले। नये कपड़े पहन कर हम लोगों की शक्लें भी खूब अच्छी बन गयी थीं। हम लोग नाव पर सवार होकर चल पड़े। रास्ते में किनारे पर एक देहाती जवान मिला। वह भी उधर ही जा रहा था। राजा ने कुछ सोच कर उसे भी नाव पर चढ़ा लिया। फिर उससे खोद-खोद कर गाँव के बारे में पूछने लगा। अपना परिचय उसने पादरी के रूप में दिया। तब युवक ने कहा, 'मैंने तो आप को मिस्टर विल्कस समझा था। भाई की मौत की खबर सुनकर आया हूँ।'

राजा ने तिकड़म से उससे यह जान लिया कि गाँव का सबसे बड़ा आदमी पीटर था जो कल रात मर गया। उसका भाई है विल्कस। एक

भाई आ रहा है विलियम, जो गूँगा व बहरा है। पीटर के भाई उसे बहुत पहले ही छोड़ कर चले गये थे। पीटर के तीन लड़कियाँ हैं। बड़ी का नाम है मेरी जीने, जो उम्र में उन्नीस बरस की है, दूसरी सुसान पन्द्रह की और तीसरी जोआना केवल चौदह साल की है और उसका ऊपर का होंठ कटा हुआ है। पीटर बहुत-सा धन छोड़ कर मरा है जो इन लड़कियाँ और उसके भाइयों को ही मिलेगा। पीटर के दोस्तों में प्रमुख हैं पादरी हाब्सन, होवी और वेनरकर और एबनर शेकलफोर्ड और वकील लेवीबेल। एक डाक्टर भी है, उसका नाम है—राबिन्सन—इस प्रकार राजा ने और भी जानकारी प्राप्त करली कि गाँव में कितने लोग हैं, कौन क्या करता है। उसने युवक से पूछा, "तो क्या वह कल दफ़नाया जायेगा ?"

'जी हाँ, दोपहर को।'

इसके बाद धन्यवाद देकर एक रास्ते के किनारे युवक उतर गया शायद उसे उधर ही जाना था।

तब राजा ने ड्यूक से पूछा, 'क्यों जनाव ! क्या आप गूँगे-बहरे का अभिनय कर सकते हैं ?'

मैं राजा की चाल समझ गया। शायद ड्यूक भी समझ गया। उसने भी अभिनय कर सकने की हामी भरी।

राजा के निर्देशानुसार हम सब गांव की ओर चले।

नाव को आते देख पन्द्रह-बीस आदमी किनारे पर आ जुटे। उन्हें संबोधित कर के राजा ने कहा, 'क्या आप में से कोई बता सकता है कि पीटर विल्मस कहाँ रहते हैं ?'

एक व्यक्ति ने गंभीरतापूर्वक कहा, 'जी, हम तो अधिक से अधिक इतना ही बता सकते हैं कि कल शाम तक वे कहाँ रहते थे।'

इतना सुनते ही राजा दहाड़ मार कर रोने लगा। बोला, 'हायरे दुर्भाग्य ! अपने भाई का मुँह देखना भी नसीब में न था।'

ड्यूक तो गूँगा बन ही चुका था। वह भी गों-गों कर के भाई को सांत्वना देने लगा। सचमुच दोनों बड़े ही धूर्त और पाजी थे !

गाँव वालों ने बढ़ कर उन्हें सम्हाला और ऊपर ले चले। फिर बताना शुरू किया कि भाइयों के लिए पीटर के प्राण अन्त तक अटके हुए थे। दोनों भीषण शोक मना रहे थे।

उधर दो-चार मिनट में ही गाँव में खबर फैल गयी कि पीटर के दोनों भाई आ गये। लोग दौड़-दौड़ कर आने लगे। देखते ही देखते हमारे चारों ओर भीड़ जमा हो गयी।

जब हम पीटर के घर पहुँचे तो वह गली भीड़ से ठसा-ठस थी। तीनों लड़कियाँ दरवाज़े पर ही खड़ी थीं। राजा ने उन्हें देखते ही बाँहें फैला दीं और तीनों ही उसकी बाहों में समा गयीं और सिसकने लगीं।

तब राजा ने ताबूत की ओर देखा जहाँ पीटर की लाश थी। दोनों उसी ओर बढ़े। ताबूत के पास जा लाश का चेहरा देख कर दोनों दहाड़ मार कर रो पड़े। बीच-बीच में राजा कहता, 'हाय, हमारे पहुँचने के पहले ही चले गये!'

फिर राजा ने लड़कियों को समझाना और सांत्वना देना शुरू किया। नेनी दौड़ कर वह पत्र ले आयी जो उनका पिता छोड़ गया था। राजा ने सभी उपस्थित व्यक्तियों के सामने ही उसे ऊँची आवाज़ में पढ़ना शुरू किया। पत्र में लिखा था कि रहने का मकान और तीन हज़ार डालर लड़कियों को दिये जायें। चमड़े का कारखाना, उसके साथ ज़मीन और मकान तथा तीन हज़ार डालर दोनों भाईयों के लिए था।

फिर नीचे तहखाने से छह हज़ार डालर लाये गये। राजा ने तीन-तीन सौ डालरों की बीस ढेरियाँ लगा दीं। फिर सब रुपयों को थैली में वापस रख कर राजा ने भाषण के ढंग में कहा, 'मित्रो! मेरे स्वर्गीय भाई बड़े उदार थे। इन लड़कियों की उन्हे बड़ी चिन्ता थी। लड़कियों को उन्होंने आधी सम्पत्ति दी और यदि हम दोनों भाई बीच में न होते तो सब लड़कियों को ही मिलता। अतः हम दोनों भाई अपना भाग भी लड़कियों को ही दे रदे है।'

इतना सुनते ही तीनों लड़कियाँ राजा, और ड्यूक से चिपट गयीं और

सभी उपस्थित लोग 'धन्य है, धन्य है' करने लगे। फिर धीरे-धीरे सभी लोग अपने-अपने घर चले गये। सभी की जुबान पर चाचाओं की उदारता की ही चर्चा थी।

फिर भोज का शानदार आयोजन हुआ। वाद में हम लोग अलग-अलग सोने गये जहाँ हमारे सोने का प्रबंध था। मैं तो दोनों का नौकर था, अतः मुझे अलग सोना पड़ा।

मैं सोचने लगा कि कैसे हत्यारों से पाला पड़ा है! ये लोग सचमुच लड़कियों का सब-कुछ लूट ले जायेंगे। मुझे उनकी निर्ममता पर आश्चर्य हो रहा था कि उन्हें तनिक भी दया न आ रही थी। मैं चुपके से उनके कमरे में घुस गया। दोनों बातें कर रहे थे। ड्यूक कह रहा था, 'जो कुछ मिला है उसे ही लेकर रातोंरात भाग चलो। लड़कियों ने सभी डालर पूरे छह हजार हमें ही रखने को दे दिये हैं। इससे अच्छा दूसरा अवसर न मिलेगा।'

राजा ने डाँट कर कहा, 'क्या कहते हो? इतना ही नहीं। सारी जायदाद बेच कर दस हज़ार डालर और जुटाना है। क्या यह सब छोड़ कर चले जायें?'

ड्यूक चुप हो गया तो राजा ने डालरों की थैली पुआल वाले गद्दे के नीचे छिपा दी और दोनों नीचे चले गये। वे आधा ज़ीना ही उतरे थे कि मैंने गद्दे के नीचे से थैली निकाली और ऊपर अटारी पर छिपा आया। फिर आकर मैंने उन दोनों के कमरे में झाँका। दोनों खर्राटे भरने लगे थे। मैं थैली लेकर नीचे आया। पर मुख्य द्वार पर ताला लगा था। मैं बाहर निकलने का मार्ग खोज ही रहा था कि अचानक सीढ़ी पर किसी के उतरने की आवाज़ हुई। घबरा कर और कोई जगह न पा मैंने थैली ताबूत में शव पर रख दी। सीढ़ी से मेरी जेन उतर रही थी। वह आकर ताबूत के पास बैठ कर रोने लगी।

मैं चुपचाप फिर अटारी पर आ गया। फिर मुझे नीचे आकर ताबूत से थैली निकालने का मौक़ा ही न मिला।

दोपहर को अंत्येष्टि का प्रबंध होने लगा। भीड़ इतनी थी कि ताबूत में झाँक कर देखने की मेरी हिम्मत न हुई। ताबूत को बंद करके लोग दफ़नाने के लिए ले गये।

अंत्येष्टि के तत्काल बाद राजा ने गाँव-भर में ख़बर करा दी कि दो दिन बाद मकान, ज़मीन, जायदाद और हबशियों का खुला नीलाम होगा। कोई चाहे तो पहले ही सौदा कर सकता है।

नीलाम वाले दिन मैं सवेरे सो ही रहा था कि राजा व ड्यूक ने आकर मुझे जगाया और पूछा, 'परसों रात तुम मेरे कमरे में गये थे?'

'नहीं तो!'

'कल गये थे?'

'नहीं।'

'किसी और को जाते देखा था?'

'नहीं भाई! हाँ, हबशियों को कई बार आते-जाते देखा था।'

राजा चीख पड़ा, 'बाप रे, तब तो ग़ज़ब हो गया! अब तो हबशी भी सभी बेचे या निकाले जा चुके हैं।'

मैंने अनजान बन कर पूछा, 'क्या कोई बात हो गयी?'

राजा ने मुझे डाँट दिया, 'तू इन मामलों में अपना दिमाग़ मत लगा।'

मैं उनके व्यवहार से दुखी हो कर नीचे जाने लगा। जब मैं लड़कियों के कमरे के सामने से गुज़रा तो देखा कि मेरी जेन अपने कपड़ों का सन्दूक खोले, फफक-फफक कर रो रही है। मुझे उस पर बड़ी दया आयी। उसके नये बने चाचा उसे और उसकी दोनों बहनों को यहाँ की सारी जायदाद बेच कर इंगलैंड लिवा ले जा रहे हैं, यह मैं जानता था। मुझे मन ही मन कष्ट हो रहा था कि ये तीनों अनाथ लड़कियाँ बुरी तरह इन धूर्त और पाजी चाचाओं के चंगुल में फँस गयी हैं। वे धूर्त इनकी जायदाद बेच कर रुपये हड़प जायेंगे और इन लड़कियों को इंगलैंड में कहीं बेसहारा छोड़ कर रफूचक्कर हो जायेंगे। मैं इन लड़-

कियों को बचाना चाहता था लेकिन मुझे कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। इस समय इस बेचारी को इस तरह रोता देख कर मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि इसके सामने मैं इसके धूर्त चाचाओं का भेद खोलने का ख़तरा अब अवश्य उठाऊँगा। मैं उन बदमाशों की धूर्तताओं में अधिक सहयोग न दूँगा।

अतः मैं उसके कमरे में चला गया। देखा, चारों ओर सन्नाटा था और आसपास कहीं कोई न था। मैंने मेरी जेन से कहा, 'आप क्यों रो रही हैं ?'

उसने रोते हुए बताया कि घर छोड़ते उसे बड़ा दुख हो रहा है। तब मैंने कहा, 'मैं आप को तीन दिनों से ही बताने का प्रयत्न कर रहा हूँ। लेकिन विश्वास नहीं होता कि आप मानेंगी या नहीं। मैं आपको एक बहुत बड़े खतरे से सतर्क करना चाहता हूँ। आप बहुत बुरे लोगों के चंगुल में बहुत बुरी तरह फँस गयी हैं।'

मेरी बात सुन कर रोना बंद करके वह आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगी। फिर बोली, 'बताओ, मैं विश्वास क्यों नहीं करूँगी ?'

'अच्छी बात है। मुझे आप का इतना ही विश्वास चाहिए। कहिये तो किवाड़ बन्द कर दूँ क्योंकि बात बहुत गुप्त है।'

मैंने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर दिया और बोला, 'आप ज़रा मन कड़ा कर के सुनियेगा। हिम्मत से काम लीजियेगा। रोने-धोने से अब कुछ न होगा। ये आप के दोनों चाचा असली चाचा नहीं हैं। ये दोनों परले सिरे के धूर्त, पाजी, धोखेबाज़ और बदमाश आवारा हैं।'

सुन कर वह सकते में आ गयी। मैंने देखा कि वह इतना आघात सह गयी, अतः मैंने संक्षेप में उसे सब-कुछ बता दिया उन धूर्तों के बारे में। सुन कर उसकी आँखों से अंगारे बरसने लगे। चेहरा क्रोध से तम-तमा गया। वह एकाएक उछल कर खड़ी हो गयी और बोली, 'नीच, पापी कहीं के ! मक्कार ! मेरे साथ चलो। अभी दोनों का मुँह काला कर के झाड़ू मार कर भगाती हूँ।'

तब मैंने समझाया—'इस प्रकार उत्तेजित होने से काम बिगड़ जायेगा। बहुत सहूलियत से अब अपने को बचाना होगा, क्योंकि दोनों धूर्तों ने सारी बस्ती में प्रभाव जमा रखा है।'

'तो मैं क्या करूँ?'

'रास्ता अपने आप निकलेगा। बस आप सतर्क रहिये। हाँ, एक बात और कहनी है। डालरों की उस थैली के बारे में।'

'वह तो मैंने ही मूर्खतावश सौंप दी है। अब कैसे वापस लूँ?'

'नहीं, वह थैली उनके पास नहीं है। आप पछतायें नहीं।'

'तो फिर किसके पास है?'

'यह तो अब मुझे नहीं मालूम। पहले तो मेरे ही पास थी। मैंने आप को देने के लिए उनके पास से चुरा ली थी। लेकिन जहाँ छिपाया था शायद अब वहाँ नहीं है। फिर भी इतना विश्वास है कि थैली उनके चंगुल से निकल गयी है। अब समय पर आप को मिलेगी।'

उसने संतोष की साँस ली।

फिर निश्चय हुआ कि वह इस संबंध में राय लेने अपने पिता के पुराने मित्रों के पास जाये। अतः किसी से बताये बिना ही वह घर के पिछवाड़े के रास्ते बाहर निकल गयी। और मैंने जाकर उसकी दोनों बहनों से बता दिया कि दीदी किसी सहेली के यहाँ गयी हैं। वे लोग खाना खा लें।

तीसरे पहर पूर्वघोषणा के अनुसार सार्वजनिक चौराहे पर ज़मीन-जायदाद, माल-असबाब का नीलाम शुरू हुआ। राजा नीलाम की बोलियाँ बोलता रहा और ड्यूक गूँगा बना इशारों से प्रसन्नता व्यक्त करता रहा।

ठीक इसी समय उधर नदी के किनारे पर एक अगनबोट रुकी और थोड़ी ही देर में एक अच्छी-खासी भीड़ चिल्लाती, शोर मचाती, गाँव के इसी चौराहे की ओर आती दिखायी पड़ी। भीड़ में कोई चिल्लाया, 'अब होशियार हो जाओ! पीटर के दो असली वारिस आ गये। अब पता

चलेगा कि कौन असली हैं और कौन नक़ली।'

भीड़ के बीच में एक सुन्दर-सा बूढ़ा आदमी और उसके साथ एक गूँगा-बहरा जवान था। भीड़ आ कर हम लोगों के सामने रुकी और भीड़ के साथ आये बूढ़े को ऊँची टेबिल पर खड़ा कर दिया। वह भाषण देने लगा—'मैं यहाँ जो कुछ देख रहा हूँ, उसकी मैंने कभी कल्पना भी न की थी। मैं पीटर का भाई हार्वी हूँ, और यह गूँगा मेरा छोटा भाई विलियम। मैं यहाँ की जनता पर ही छोड़ता हूँ कि वह हम दोनों और तीन दिनों से बने इन दोनों पीटर के भाइयों में असली-नक़ली की जाँच कर लें।'

ठीक इसी समय गाँव का वकील लेवीबेल और डाक्टर आ गये। दोनों ही पीटर के पुराने घनिष्ठ मित्र थे।

वकील ने हस्तक्षेप करते हुए राजा से पूछा, 'तुम यदि हार्वी हो तो बताओ तुम गाँव में कब आये?'

'पीटर के मरने के एक दिन बाद और दाह-संस्कार के पूर्व।'

'कैसे आये?'

'अगनबोट से।'

इतना सुनते ही गाँव का एक तगड़ा-सा आदमी जो भीड़ में खड़ा था, चीख उठा, 'झूठ, सफेद झूठ! मैंने इन्हें आते देखा है। ये लोग नाव से आये हैं। इनकी नाव पर गाँव का टिम कालिन्स भी था। और इन दोनों के साथ एक लड़का भी था।'

डाक्टर ने पूछा, 'क्या उस लड़के को पहचान सकते हो?'

'वह दिखायी पड़े तो ज़रूर पहचान सकता हूँ। अरे भाई, वहाँ खड़ा है, वही तो है।' मेरी ओर इशारा करके उसने कहा।

तब डाक्टर ने उपस्थित भीड़ को सम्बोधित करके कहा, 'भाइयो, मेरा तो शुरू से ही यह विश्वास था कि ये दोनों धूर्त और बदमाश हैं। लेकिन इसकी जाँच आप लोग ही कर लें और स्वयं निर्णय भी करें। फिर इनकी सजाएँ भी आप ही निश्चितकरें। सबसे पहले आप लोग इनसे छः हजार डालर वाली थैली वसूलें।'

मैं समझ गया कि अब राजा और ड्यूक की मुसीबत आयी और साथ ही मेरी भी। लेकिन राजा तो एक ही धूर्त था। चेहरे पर शिकन तक नहीं आयी उसके। और बड़ी संजीदगी से उसने कहना शुरु किया, 'सज्जनो, मामला पेचीदा तो हो ही गया लेकिन इसके न्यायपूर्ण निबटारे में मेरी ओर से कोई बाधा न होगी। हाँ, डालरों की थैली हमारे पास नहीं है। आप मेरा विश्वास करें और चाहें तो किसी को घर भेज कर तलाशी ले लें।'

वकील ने पूछा, 'थैली तुम्हें दी गयी थी। फिर कहाँ गयी ?'

'भतीजी के हाथ से थैली पाकर उसे मैंने पलंग के पुआल के गद्दे के नीचे छिपा गया था। बाहर रख कर मैं कोई खतरा नहीं उठाना चाहता था। लेकिन मैं जानता न था कि हबशी इतने चोर होते हैं ! जाते समय हबशी ही थैली चुरा ले गये।'

'झूठ ! सफेद झूठ !'

'आप लोग मेरा विश्वास करें।'

क्षण-भर सन्नाटा रहा। वकील कुछ सोचता रहा। फिर बोला, 'अच्छा आपका झूठ-सच एक ही बात से खुल जायेगा कि आप बतायें कि मृतक पीटर के शरीर में कहीं किसी गोदने का निशान था या नहीं ?'

इस सवाल को सुन कर तो मैं सन्न रह गया। अब तो राजा की किसी तरह भी बचत न थी। लेकिन राजा इतने से भी हार मानने वाला न था। उसने बिना हिचक कहा, 'उनकी छाती पर बहुत नन्हा-सा तीर का चिह्न गुदा था।'

तब नये आये बूढ़े से पूछा गया। उसने कहा, 'तीर का निशान नहीं था। उनकी छाती पर एक 'पी' और 'बी' लिखा था।'

इसके बाद वकील ने राजा और नये आये बूढ़े से एक-एक लाइन लिखवा कर पीटर के पास से प्राप्त उसके भाई की पुरानी चिट्ठियों से हस्तलिपि की तुलना की। उसमें भी राजा को मात खानी पड़ी। लेकिन

राजा यों हताश होने वाला न था। उसने ज़िद की कि क़ब्र खोद कर लाश के शरीर पर गोदने का निशान देख कर ही सच-झूठ का निश्चय होना चाहिए।

'ठीक है! ठीक है!' सभी ने कहा।

फिर राजा, ड्यूक, मुझे और दोनों आगन्तुकों को पकड़ कर भीड़ सहित डाक्टर और वकील क़ब्रिस्तान तक आये।

जल्दी-जल्दी क़ब्र खोदी जाने लगी। रोशनी भी मँगा ली गयी। जब क़ब्र खुद गयी तो ताबूत बाहर निकाला गया। मैं थर-थर काँपने लगा कि यदि राजा की बात झूठ निकली तो हम लोगों की क्या गति बनेगी! तभी कोई ज़ोर से चिल्लाया, 'ओ हो, हो! डालरों की थैली तो लाश के पेट पर पड़ी है।'

बस, सुनते ही सभी लोग उसे देखने दौड़ पड़े। हमारी ओर किसी का ध्यान न था। मुझे यही सुनहरा अवसर लगा। अँधेरे में ही मैं सड़क की तरफ सिर पर पाँव रख कर भागा। जल्दी ही सड़क मिल गयी। मैं और तेज़ी से सरपट दौड़ा। चारों ओर घोर अँधेरा। पानी भी बरसने लगा।

मैं भागता हुआ अपनी नाव के पास आ गया और चिल्ला कर कहा, 'जिम, जल्दी से नाव खोलो और भागो। उन दुष्टों से पीछा छूट गया।'

जिम ने फौरन नाव खोल दी, जैसे वह भी तैयार बैठा था। पलक मारते ही हम नदी की धारा में बहने लगे। थोड़ी ही देर में काफी दूर आ गये। अब मेरा भय भी जाता रहा। तभी कुछ शोर सुनायी पड़ा। बिजली की चमक में मैंने देखा कि एक नाव तीर की तरह हमारी ओर चली आ रही है। दूसरे ही क्षण देखा कि उस नाव पर राजा और ड्यूक थे।

मैं तो बेहोश होते-होते बचा। लगा कि मैं अपनी रुलाई न रोक सकूंगा। इस दुष्टों से अभी भी पीछा नहीं छूटा?

दोनों ही कूद कर मेरी नाव पर चढ़ आये। राजा ने मेरा गला

पकड़ लिया और दहाड़ा, 'कमीने कुत्ते ! हमें फँसा कर यों भागना चाहता था ? मैं तेरा गला घोंट दूँगा ।'

मेरी समझ में न आया कि मैं क्या करूँ ? लेकिन तभी ड्यूक ने मेरी रक्षा की । वह राजा पर बिगड़ उठा, 'अबे, बेवकूफ बूढ़े ! लड़के को छोड़ दे । अपने कर्म नहीं देखता ? सारी मुसीबत तेरे कारण ही आयी । धूर्त, पाजी ! वह तो कह डालर की थैली देखने में सब लग गये और हम भाग सके, नहीं तो तेरे कारण अब तक जेल में पहुँच गये होते । तू खुद धोखेबाज़ और बदमाश है ।' कहते हुए डूयूक ने राजा को पकड़ कर पटक दिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा । अब राजा के होश ठिकाने आये । मैंने और जिम ने मिल कर उसे बचाया ।

उस दिन की घटना के बाद एक सप्ताह के लगभग शान्ति रही । राजा और ड्यूक भले आदमियों की तरह रहने लगे । लेकिन बाद में फ़िर दोनों धूर्तता के कार्यक्रम बनाने लगे ।

एक दिन एक गाँव के किनारे नाव रोक कर हम आराम कर रहे थे । राजा बहुत देर से ग़ायब था । फिर उसे खोजने मुझे व ड्यूक को जाना पड़ा । गाँव में वह एक ताड़ीखाने में बेहोश पड़ा मिला । ड्यूक उसको लाने की व्यवस्था में लग गया । मैंने मौक़ा देखा तो भाग कर नाव पर आया कि जिम के साथ भाग चलें । लेकिन वहाँ नाव पर जिम न था । मैंने उसे पुकारा, चिल्लाया, खोजा पर उसका कहीं पता न लगा ।

मैं घबराया हुआ सड़क पर आया । वहाँ मुझे एक युवक दिखायी पड़ा । उसे रोक कर मैंने पूछा, 'क्या आपने किसी हबशी को जाते देखा है ?'

'हाँ ।'

'किधर ?'

'दो मील दूर, उधर। सिलास फेल्प्स के यहाँ। वह भागा हुआ हबशी था। उन्होंने पकड़ लिया। उसे पकड़ने के लिए दो सौ डालर का इनाम घोषित था। एक बूढ़े ने उसे पकड़ा था और उनके हाथ चालीस डालर में बेच दिया है।'

इतना कह कर वह चला गया। मुझे लगा कि मेरा सर्वस्व ही लुट गया। अब क्या करूँ? एक बार सोचा कि टाम सायर या मिस वाटसन को चिट्ठी लिख कर सब भेद खोल दूँ कि मैं मरा नहीं, न जिम ने मुझे मारा ही है। लेकिन बहुत-सी बातें सोच कर लिख न सका।

मैं सिलास फेल्प्स की तलाश में चल पड़ा। लगभग दो-ढाई मील चलने पर एक साइन बोर्ड देखा, लिखा था—'फेल्प्स की आरा मिल' बस, फेल्प्स परिवार का पता पूछता मैं बढ़ता रहा। काफी चलने पर उनका घर आया। घर में जाने की सोच ही रहा था कि एक शिकारी कुत्ता जाने किधर से आकर मुझ पर झपटा। तब तक दूसरा भी आ गया। देखते ही देखते मैं कई कुत्तों से घिर गया।

तभी हाथ में बेलन लिये एक हबशी स्त्री बाहर आयी और कुत्तों को डाँटा—'टाइगर, स्वाट! नहीं! भागो यहाँ से!'

उस हबशी स्त्री के पीछे आकर दो बच्चे भी खड़े हो गये। एक छोटी लड़की और एक छोटा लड़का।

फिर एक गोरी महिला मकान के भीतर से दौड़ कर आती दिखी। यही कोई पैंतालीस-पचास के बीच रही होगी। मुझे देखते ही वह चीख-कर बोली, 'आ गये! आखिर तुम आ गये! ओहो, आ गये न।'

आगे बढ़ कर उस स्त्री ने मुझे छाती से लगा लिया। फिर रोने लगी। बोली, 'सोचा था कि तेरा चेहरा माँ को पड़ा होगा। न सही। तुम आ गये। मैं कितनी खुश हूँ!' फिर अपने बच्चों को पुकार कर कहा, 'देखो तुम्हारा मौसेरा भाई आया है।'

फिर हबशी नौकरानी से बोली, 'गरम नाश्ता तैयार करो।'

फिर ले जाकर मुझे कमरे में बैठाया। बोली, 'इतने दिनों कहाँ रहे ? नाव पर तकलीफ तो नहीं हुई ?'

'नहीं, श्रीमती जी......।'

'यह क्या ? श्रीमती जी क्यों बोलता है ? मौसी क्यों नहीं कहता ? मैं तेरी मौसी हूँ। सैली मौसी ! समझे ? हाँ तेरा सामान कहाँ है ?'

'नाव पर।'

'हाय राम ! कोई चुरा न ले गया हो ?'

'खूब छिपा कर नाव रखी है। कोई देख नहीं सकता।' कह कर मैं चुप हो गया। यहाँ भी किस मुसीबत में आ फँसा ? जिम के बारे में पूछने का मौक़ा ही नहीं मिलता। मैंने हिम्मत जुटा कर पूछना चाहा, तभी श्रीमती फेल्प्स ने मुझे बिस्तरे की ओट में छिपाते हुए कहा, 'वे आ रहे हैं। तेरे मौसा। तुम छिप जाओ। अब देखो कैसा छकाती हूँ !'

तभी एक वृद्ध सज्जन भीतर आये। श्रीमती ने पूछा, 'क्यों, आ गया ?'

'नहीं।'

'हे भगवान ! कहाँ अटक गया ? उसे कुछ हो तो नहीं गया ?'

'कुछ नहीं कहा जा सकता।'

तब श्रीमती ने झुक कर मुझे निकाला और मुस्करा कर खड़ी रहीं। मुझे देख कर मिस्टर ने कहा, 'अरे, यह कौन है ?'

'पहचानो।'

'मैं तो नहीं पहचान सकता।'

'टाम सायर है, और कौन ?'

'अच्छा, अच्छा !'

अब तो मेरी मुसीबत का अन्त नहीं। तो यह टाम सायर की मौसी है ! बच्चों से पता लगा कि टाम सायर आने वाला था, उसी की

प्रतीक्षा थी । तो टाम सायर भी आता ही होगा । अगर आते ही उसने नाम लेकर मुझे पुकारा तब ? अच्छा हो कि चल कर उसे रास्ते में ही रोकें और सब बता दें ।

यही सोच कर मैं बाहर आकर सड़क पर टहलने लगा ।

काफी देर प्रतीक्षा करने के बाद एक घोड़ागाड़ी लेकर मैं शहर के लिए चल पड़ा । और थोड़ी दूर ही गया था कि उधर से एक और घोड़ा-गाड़ी आती देखी । उस पर टाम सायर चला आ रहा था । मैंने हाथ उठा कर उसकी गाड़ी रोकी । मुझे देखते ही टाम का मुँह सन्दूक के ढकने-सा खुल गया । लगा उसका गला सूखने जा रहा है । बहुत प्रयत्न करके वह बोला, 'मैंने तो कभी तुम्हारा कोई अहित नहीं किया है । फिर क्यों मरने के बाद भी सामने आकर मेरा रास्ता रोक रहे हो ?'

मैंने समझा कर कहा, 'न मैं मरा हूँ, न मर कर रास्ता रोकने ही आया हूँ ।'

'देखो, मैंने तुम्हें कभी धोखा नहीं दिया । फिर इस तरह झूठ क्यों बोलते हो ? सच बताओ, क्या तुम भूत नहीं हो ?'

'कसम खाकर कहता हूँ । मैं ज़िन्दा हूँ ।'

'कहते हो तो मान लेता हूँ । पर तुम्हारा तो खून हुआ था न ।'

'नहीं, बिलकुल नहीं । वह तो मेरी ही चाल थी । तुम मुझे छू कर देखो तब विश्वास होगा ।'

मुझे छू कर वह आश्वस्त हुआ कि मैं जीता-जागता हकलबेरी फ़िन हूँ । फिर तो उसकी प्रसन्नता का क्या कहना ! मैंने उसकी उत्सुकता कम करने को संक्षेप में अपनी कहानी सुनानी शुरू की । सब कुछ सुन कर वह प्रसन्न हुआ । फिर बोला, 'तो ठीक है । तुम मेरा सामान लेकर मौसी के पास लौट जाओ । मैं दो-डेढ़ घण्टे बाद आऊँगा । शुरू में वहाँ तुम ऐसे बनना जैसे मुझे नहीं जानते ।'

मैंने कहा, 'ठीक ! लेकिन एक चक्कर और है । यहाँ एक हबशी है जिसे मैं आज़ाद कराना चाहता हूँ । उसका नाम जिम है । अपने गाँव

की मिस वाटसन वाला हबशी जिम।'

'क्या कह रहे हो ? जिम तो......।'

'वह सब बाद में बताऊँगा। अभी तो उसे छुड़ाना है।'

'ठीक है, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'

फिर मैंने उसका सन्दूक अपनी गाड़ी पर लाद लिया और वापस आया। बूढ़े मौसा दरवाज़े पर ही मिले। बोले, 'कमाल कर दिया ! इतनी जल्दी आ गये ?'

मैंने हँस कर बात उड़ा दी। बूढ़े मौसा बहुत भोले, सीधे और नेक आदमी थे।

थोड़ी देर बाद टाम आया। गाड़ी उसने सड़क पर से ही लौटा दी और पैदल घर तक आया। पहले उसे मौसी ने ही देखा। बोली, 'कोई आया है क्या ? कौन हो सकता है ?'

तब तक टाम ने आकर पूछा, 'यह जगह मिस्टर आर्चीवाल्ड निकोलस की है न ?'

बूढ़े मौसा ने कहा, 'नहीं, बच्चे ! गाड़ीवान तुम्हें ग़लत जगह उतार गया। निकोलस का घर तो यहाँ से तीन मील दूर है। लेकिन तुम चिन्ता मत करो। आओ ! हमारे साथ खाना खाओ। फिर हम तुम्हें अपनी गाड़ी से पहुँचा देंगे।'

'आपको बिला मतलब तकलीफ़ क्यों दूँ ? मैं पैदल ही चला जाता हूँ।'

'वाह ! ऐसा कैसे होगा ? तुम आ कर आराम से बैठो। हमारे यहाँ आकर यों ही नहीं जा सकते।'

'हाँ बेटा, आओ।' मौसी ने भी कहा, 'इसे अपना ही घर समझो।'

फिर सबों के साथ वह बैठकखाने में आया। वहाँ आते ही उसने मौसी का मुँह चूम लिया।

बस मौसी तड़प उठी। गुस्से से लाल होती और मुँह पोंछती हुई बोली, 'हरामी, पिल्ला ! इसकी हिम्मत तो देखो !'

'आप नाराज़ हो गयीं क्या ?'

'सुनो अब इस पाजी, कमीने की बात ! मैं पूछती हूँ कि तूने क्या समझ कर मुझे चूमा ?'

'मैंने तो सोचा कि आपको अच्छा लगेगा ।'

'चुप रह, शैतान !'

'ठीक है, अब कभी नहीं । विश्वास करिये, आप कहेंगी तब भी नहीं ।'

'क्या कहा ? मैं तुझसे चूमने को कहूँगी ? कहेगी मेरी जूती ! लुच्चा आवारा कहीं का, सुनो तो इसकी बातें !'

फिर मेरी तरफ मुड़ कर बोला, 'क्यों टाम ! क्या तुमने भी सोचा था कि मौसी इस तरह नाराज़ होंगी या बाँहें फैला कर प्यार से कह उठेंगी सिड सायर...।'

'हे भगवान ! कितना शरारती है !' कह कर मौसी एकदम-से बाँहें फैला कर लपकी । बोली, 'पाजी, मुझे छका रहा था ? हमें क्या पता कि यह भी आ रहा है । बहन ने तो सिर्फ टाम के आने की बात लिखी थी ।'

'मेरे आने की पहले बात कहाँ थीं ? टाम के आने के बाद मेरी ज़िद के कारण...।'

सभी हँसने लगे । फिर खूब बढ़िया खाना खाया गया । खाने के बाद मौसी के छोटे लड़के ने अपने पिता से कहा, 'आज गाँव में नाटक होने वाला है । दूसरे शहर से नाटक वाले आये हैं । कहिये तो टाम और सिड भइया के साथ देख आऊँ ?'

बूढ़े मौसा ने कहा, 'वहाँ मत जाना । खेल होगा ही नहीं । उस भागे हुए हबशी ने मुझसे दोनों धूर्त कलाकारों के बारे में सब बता दिया है । मैंने गाँव वालों को बताया है । शायद गाँव वाले उनकी अच्छी तरह पिटाई भी करें ।'

मैं समझ गया कि ये दोनों कलाकार राजा और ड्यूक ही होंगे । यहाँ भी नाटक के नाम पर सब को बेवकूफ बनाने आ गये !

रात को सब सोने चले गये । हमें दोनों को ऊपर वाले कमरे में सुलाया गया । काफी रात बीते हम दोनों खिड़की से होकर बिजली के

खंभे के सहारे नीचे उतरे और सड़क पर आ गये। वहाँ बैठ कर टाम ने बताया कि मेरी हत्या की खबर उड़ने के बाद क्या-क्या हुआ।

मैं राजा और ड्यूक का हाल जानना चाहता था। हम लोग उसी ओर बढ़े जहाँ नाटक होने वाला था। शहर के बीच पहुँचे ही थे कि सामने से भीड़ आती दिखी। लोग मशालें लिये थे। भीड़ टीन पीटती हुई शोर कर रही थी। भीड़ पास आयी तो देखा कि राजा और ड्यूक रस्सी से बँधे घिसटते जा रहे हैं। उनके सारे बदन में जहाँ-तहाँ कोलतार पोत दिया गया था। वे बड़े भयानक शक्ल के लग रहे थे। कुछ लोगों से पूछने पर पता लगा कि लोगों को खेल पसन्द नहीं आया, इसीलिए दोनों को पकड़ा है।

मैं अब उनकी कोई मदद नहीं कर सकता था। समय बीत चुका था। उन्हें बचाया नहीं जा सकता था। मैं बहुत उदास मन घर वापस आया।

रात को हम दोनों को नींद नहीं आयी।

लेटे-लेटे एकाएक टाम ने कहा, 'धत्तेरे की! हम भी कैसे गधे हैं! मुझे मालूम हो गया कि तुम्हारा जिम कहाँ है।''

मैं उछल कर बैठ गया, 'कहाँ है?'

'वह उधर पास वाली झोंपड़ी है न! तुम्हें याद नहीं क्या कि जब हम खाना खा रहे थे तब एक हबशी उधर खाना ले गया था न!'

'मैंने समझा कि कुत्तों के लिए...।'

'हाँ, मैं भी पहले यही समझा था, लेकिन खाने में तरबूज़ भी था। कुत्ते तरबूज़ नहीं खाते। फिर जब हम खाना खाकर उठ रहे थे तब हबशी ने एक चाभी लाकर मौसा को दी थी न! वह चाभी उसी झोंपड़ी के दरवाज़े की होगी।'

'तो पहले पता लगा लेना चाहिए कि वह जिम ही है न! फिर

रात को मौसा की चाभी चुरा कर जिम को छुड़ाया जाये और नाव से भाग निकलें। क्यों ठीक होगा न ?'

'योजना तो ठीक है पर इसमें कुछ मज़ा नहीं है। बिना कुछ टंटे-बखेड़े के मज़ा न आयेगा।'

मैंने टाम का विरोध न किया क्योंकि मुझे उससे काम लेना था।

दूसरे दिन हमने जाकर झोंपड़ी का मुआइना किया। देखा कि एक पटरा निकाल देने-भर से काम बन जायेगा। जिम के निकलने-भर की जगह बन जायेगी। लेकिन यह बात टाम को पसंद न आयी। वह कुछ सनसनीखेज़ काम करना चाहता था। उसकी राय थी कि झोंपड़ी के नीचे सुरंग खोद कर जिम को निकाला जाये। इसमें एक सप्ताह तो लगेगा ही।

रात बीतने के पहले ही हम उस झोंपड़ी के पास गये। वहाँ हब्शी-नौकर हबशी-बंदी के लिए खाना तैयार कर रहा था। हमने उस हबशी से दोस्ती कर ली। उसने अपने बालों को छोटे-छोटे गुच्छे बना कर डोरे से बाँध रखा था। यह डाइनों से दूर रहने का टोटका था। उसका कहना था कि यहाँ रात में डाइनें सिर पर चढ़ कर सताती हैं।

टाम ने उससे पूछा, 'क्या यह खाना कुत्तों के लिए है ?'

'नहीं शाब, यह अजीब जानवर है। देखोगे, शाब ?'

'हाँ, हमें भी ले चलो।'

हम दोनों हबशी के साथ भीतर झोंपड़ी में गये। देखते ही जिम बोल उठा, 'अरे वाह, हक साहब और टाम साहब ?'

खाना देने वाला हबशी उछल पड़ा, 'वाह शाब, यह तो आप लोगों को पहचानता।'

हम दोनों घबरा गये। लेकिन टाम ने हिम्मत से काम लिया। डाँट कर बोला, 'कौन पहचानता है ?''

'यह आपका नाम लिया, शाब !'

'झूठ ! किसने सुना ?' फिर मेरी ओर मुड़ कर पूछा, 'तुमने

सुना ?'

'नहीं तो, यहाँ तो कोई आवाज ही नहीं हुई।' मैंने कहा। टाम ने मुड़ कर जिम से पूछा, 'तुम कुछ बोले थे ?'

'नहीं शाब !' जिम ने कहा।

'हमें पहले देखा है कभी ?'

'नहीं, शाब !'

तब तक खाना लाने वाला हबशी चीख़ पड़ा, 'शाब, यह डाइनों का करतूत है, शाब ! यह सब क्यूँ मेरे पीछे पड़ी हैं ? जान का गाहक बना है सब डाइन, शाब !'

टाम ने झट-से एक सिक्का हबशी को दे कर कहा, 'डाइन की बात किसी से मत कहना। नहीं तो फिर सतावेगी।'

'अच्छा, अच्छा' कह कर सिक्के को जेब में रख कर वह पानी लेने गया। तब तक सुरंग खोद कर जिम को निकालने की योजना हमने जिम से बता दी।

जब हबशी पानी ले कर लौट आया तो टाम ने उससे कहा, 'इधर बहुत डाइनें हैं। अब जब तुम्हें डर लगे तो हमें बुला लेना। अकेले इधर मत आना, समझे !'

हबशी यह सहारा पाकर बहुत खुश हो गया। फिर हम तीनों बाहर आ गये और हबशी ने झोंपड़ी का ताला बन्द कर दिया।

दूसरे दिन नाश्ते के बाद हम और टाम जंगल की ओर चले गये ताकि इतमिनान से सारी योजना बना लें। सारी बातें तो आसान थीं। सबसे कठिन काम था जिम के पाँव में पड़ी बेड़ी को काटना। वह भाग न जाये इस डर से उसके एक पाँव में दस फुट लंबी एक जंज़ीर पहना दी गयी थी जिसका दूसरा सिरा खाट के पावे में पहनाया हुआ था। प्रश्न यह था कि पावे को काट कर उससे तो जंजीर निकाली जा सकती

है पर जिम के पाँव से जंजीर कैसे अलग की जाये ? क्योंकि जब तक जंज़ीर बँधी रहेगी वह आज़ाद होकर भी दौड़ न पावेगा।

बहुत सोच-विचार के बाद टाम ने कहा कि मैंने किताबों में पढ़ा है कि बहुत से बहादुर कैदी हाथ में बँधी जंज़ीर न खोल पाने के कारण भागते समय अपना हाथ ही काट देते हैं। फिर हम भी बहादुर बंदी की तरह जिम का एक पाँव ही काट देंगे।

टाम की यह बात मुझे बड़ी मूर्खतापूर्ण लगी लेकिन मैंने उसका खुल कर विरोध न किया क्योंकि टाम किताबी ज्ञान का अक्षरश: पालन करने का आदी रहा है। मैंने चुप रह कर अपना विरोध प्रकट किया और सोचा कि फिर कभी टाम को समझा लूंगा।

उस रात जब सब लोग सो गये तब हम दोनों बिजली के खंभे के सहारे नीचे उतरे। मैंने पहले से ही कुदाल और फावड़े का इन्तज़ाम कर के झाड़ी में छिपा रखा था। अत: मैं फ़ौरन ही एक कुदाल और एक फावड़ा उठा लाया।

हम दोनों काम में लग गये। किस जगह सुरंग के लिए गढ़ा खोदना है यह पहले से ही निश्चित कर लिया गया था। उसे कुदाल थमा कर मैंने फावड़ा उठाया और दोनों ही काम में जुट गये। कभी वह कुदाल चलाता और कभी मैं। आधे घण्टे तक बिना रुके हम काम करते रहे। इसके बाद थक कर दोनों चूर हो गये। आधे घण्टे में ही काफी गहरा गढ़ा खुद गया था। हम लोगों ने अँधेरे में ही काम किया क्योंकि रोशनी जलाते तो पकड़े जाने का डर था।

दूसरी रात फिर हम दोनों बिजली के खंभे के सहारे नीचे उतरे। आज अपने साथ एक मोमबत्ती भी लेते गये। झोंपड़ी के पास जा कर खिड़की के नीचे खड़े हो कर हमने सुना कि जिम तो खर्राटे भर कर गहरी नींद में सो रहा है। हमने मोमबत्ती अंदर फेंकी मगर जिम की नींद न टूटी। अब हम लोग जाकर खुदाई में जुट गये। आज लगातार अढ़ाई घंटे हम दोनों खुदाई के काम में लगे रहे। अढ़ाई

घंटे की इस मेहनत में हमने सुरंग खोद डाली और उसी से घुस कर हम दोनों भीतर गये और जाकर जिम की खाट के नीचे निकले। सब से पहले हम लोगों ने झोंपड़ी में पड़ी मोमबत्ती खोजी। फिर जाकर जिम के सिरहाने खड़े हुए। जिम आज पहले से अधिक प्रसन्न, खुश, तन्दुरुस्त और तगड़ा दिखायी दिया। हमने उसे धीरे-धीरे जगाया। जाग कर हम लोगों को देखते ही वह प्रसन्न हो उठा और प्रेम प्रदर्शित करने लगा। सब से पहले जिम ने कहा कि छेनी-हथोड़ी लाकर सब से पहले मेरी बेड़ी काटो।

उसे आश्वासन देकर टाम ने बैठ कर जिम को सब से पहले उसे मुक्त करने की जो योजना बनायी थी उसे समझाया।

जिस से ही मालूम हुआ कि बूढ़े मौसा रोज़ या एक दिन छोड़ कर आते हैं और आपने साथ ही जिम से प्रार्थना कराते हैं। और मौसी भी आकर बराबर कुशलक्षेम पूछती रहती हैं और उसके आराम व भर-पेट खाना मिलता है या नहीं, इसका बराबर ध्यान रखती हैं। दोनों ही बड़े भले, दयालु और मेहरबान हैं।

हम लोग अभी झोपड़ीं में धुँधलके में खड़े ही थे कि जिम की खटिया के नीचे से एक-एक कर कुत्ते निकलने लगे और देखते ही देखते वहाँ ग्यारह कुत्ते इकट्टा हो गये। उनकी आवाज सुन कर खाना देने वाला हवशी नैट भी आ गया। इतने कुत्ते एक साथ देख कर वह बुरी तरह घबरा गया और उसकी समझ में न आया कि आख़िर ये सब आये किधर से। नैट की घबराहट का लाभ उठा कर हम दोनों भी अँधेरे से उसके पीछे से होकर उसके सामने आ गये और 'क्या हुआ, क्या हुआ' कर के यों पूछने लगे जैसे शोर सुन कर तथा घबरा कर आये हैं और पहले से वहाँ न थे। नैट के तो होश ही उड़ गये थे। हमें देख कर उसे थोड़ा ढाढ़स बँधा और वह चीख उठा, 'डाइनें !' और ज़मीन पर कुत्तों के बीच धड़ाम से गिर कर इस तरह हाय-हाय करने लगा मानो अब डाइनें उसे मार ही डालेंगी और ज़िन्दा नहीं छोड़ेगीं।

टाम ने जिम के खाने के तसले से मांस की एक छोटी-सी बोटी उठा ली और दरवाजे के बाहर फेंक दी। सभी कुत्ते फुर्र-फुर्र बाहर भाग गये। तब उसने नैट को पुचकारना और दिलासा देना शुरू किया। और स्थिति को और अपने अनुकूल करने के लिए पूछने लगा कि उसने कोई अलाय-बलाय तो नहीं देख लिया।

नैट आँखे टिमटिमाता हुआ उठ खड़ा हुआ और चारों ओर देखता हुआ बोला, 'हाय-हाय! शिड शाब! आप मेरे को तो मूरख बोलेगा। मगर अभी-अभी मैनें यहाँ कुत्ते देखे। हजार-लाख कुत्ते। वे सभी प्रेत-भूत और डाइनें। मेरे को इतना डर लगा शाब कि मैं तो जरूर मर जाता, जरूर मर जाता, शाब! सब मेरे ऊपर कूद रहे थे शाब, हजार-लाख कुत्ते। हाय शाब! सब मेरे ऊपर चढ़े आ रहे थे, शाब! अगर एक भी डाइन मेरे हाथ आ जाती तो मैं भी आज निपट लेता! शाब, मैं मज़ा चखा देता! लेकिन डाइन सब बहुत चालाक होता, शाब! मैंने बहुत हाथ मारा, शाब! लेकिन एक भी हाथ नही आया, शाब! किसी तरह भी हाथ नहीं आया, शाब! मैं बोलता शाब, मत पकड़ाओ, मगर मेरे को इस तरह डराता क्यों है, शाब? मेरे ऊपर कुत्ता काहे को छोड़ता, शाब! इस माफिक मेरे पीछे काहे को पड़ता, शाब? मेरे को बस छुट्टी दे दे, मैं तो इतना सी माँगता है शाब, बस इतना ही। जब हम उनका कुछ नहीं बिगाड़ता तो वह हमको काहे को सताता है, शाब!'

टाम ने नैट की घबराहट का लाभ उठा कर कहा, 'सुनो' नैट, मैं जानता हूँ कि वह तुम्हें क्यों सताती हैं। वह तुमको उसी समय सताती हैं जब तुम जिम के पास आते हो। लगता है कि जिम से उनकी दोस्ती है। तुम बस जिम को खुश रखा करो, इसे खूब अच्छा खाना दिया करो। और इसके लिए हम तुम्हारे हाथ कभी कोई समान भेजें तो ठीक से पहुँचा दिया करना और किसी से इसका ज़िक्र मत करना। बस जब जिम खुश रहेगा तो डाइनें तुम्हें कभी नहीं सतायेंगी।'

'अच्छी बात है, शाब! आप जैसा कहेगा, करूँगा। जिम को कोई

तकलीफ़ नहीं होने दूँगा। बस आप उनसे हमारा पिण्ड छुड़ा देना, शाब !'

फिर स्वस्थ होकर नैट चला गया। जिम मुस्कराने लगा। मुझे भी टाम की इस चालाकी पर प्रसन्नता हुई। अब हम कोई भी चीज़ आसानी से जिम के पास भेज सकेंगे।

उधर बूढ़े मौसा भागे हुए हबशी जिम के लिए कई जगह पत्र लिख चुके थे लेकिन कहीं से कोई जवाब नहीं आ रहा था कि कोई आकर अपने भाग हुए हबशी को छुड़ा ले जाता। इसलिए एक दिन उन्होंने कहा कि अब वे सेंट लुई और न्यू ओरलियन्स के अखबारों में जिम के बारे में विज्ञापन छपावेंगे कि जिसका भी यह हबशी हो आकर लिवा ले जाये। अधिक दिन उसे बंदी रख कर वह और खरचा आने में असमर्थ थे। मौसा ने जब सेंट लुई का नाम लिया तो मुझे अपने पाँव तले की धरती खिसकती नज़र आयी। मेरे तो रोंगटे खड़े हो गये। मेरे मन में आया कि अब फौरन भागना चाहिए। यहाँ रुकना खतरे से खाली नहीं है। अब हमारे पास खोने को तनिक भी समय न था।

जब मैंने यह समस्या टाम के सामने रखी तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तनिक भी नहीं घबराया। उसकी वह हरकत देख कर मुझे भी बड़ी परेशानी हुई, यह कैसा आदमी है! खतरे को खतरा मानता ही नहीं। टाम ने बड़े इतमिनान से कहा, 'इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है? अभी तो मज़ा आयेगा। अब तो गुमनाम पत्र लिखने का समय आया है।'

'यह गुमनाम पत्र की क्या ज़रूरत पड़ी ?'

'लोगों को सतर्क कर देना होगा कि अब कुछ होने जा रहा है।

सतर्क करने के वैसे तो बहुत से तरीके हैं। बात यह है कि तुम जिम का भागना एक साधारण हबशी-कैदी का भागना समझते हो, लेकिन ऐसी बात नहीं है। मैं जिम की रिहाई को ऐतिहासिक घटना बना दूँगा। मैं हँगामा किये बिना यहाँ से जाऊँगा नहीं। ऐसे मौकों पर आम तौर पर कोई ना कोई जासूसी करता ही रहता है और मालिक को खबरें पहुँचाता रहता है। मैंने किताबों में पढ़ा है कि जब सत्रहवाँ लुई तुलरीज से भागने को हुआ तो एक बाँदी ने जासूसी कर के इसकी सूचना वहाँ के हाकिम को दे दी। एक जगह मैंने पढ़ा है कि अकसर भागने वाले की माँ बंदी के कपड़े पहन कर पीछे रह जाती है और माँ के कपड़े पहन कर बंदी भाग जाता है।'

'लेकिन यह सब हँगामा करने से अपना ही काम मुश्किल होगा। मैं तो चाहता हूँ कि हमारे रास्ते में कोई रुकावट न आवे। हम अधिक खतरा नहीं उठाना चाहते।'

'बिना खतरा उठाये मज़ा क्या आयेगा ? तुम गुमनाम चिट्ठी पहुँचा आना। मैं फूस के एक पुतले को जिम के कपड़े पहना कर उसकी खाट पर लिटा दूँगा। जिम राजबंदी की तरह भागेगा।'

रात को टाम ने गुमनाम पत्र लिखा और आधी रात में मैं जाकर चुपचाप उस पत्र को सदर दरवाज़े के नीचे खिसका आया। सब कुछ मैंने वैसा ही किया जैसा टाम ने कहा था। पत्र में लिखा था—

'होशियार ! बड़ी मुसीबत आने वाली है ! सावधान रहना ! गफ़लत न होने पावे !'
—गुमनाम मित्र।

दूसरी रात हमने सदर दरवाज़े पर खून से एक दूसरे को काटती हड्डियों के ऊपर खोपड़ी का निशान बना दिया। तीसरी रात में पिछले दरवाज़े पर एक ताबूत की आकृति बना दी।

अब तक घर वाले बुरी तरह डर गये थे। अगर सारे घर में भूतों

का कब्जा हो जाता और हर कोने-अंतरे में और मेजों व खाटों के नीचे और हवा में भी भूत बस जाते तब भी शायद वे इतना न डरते, जितना हमारे इन कारनामों से वे डर गये। सबसे अधिक तो मौसी डरीं। उनका हाल सब से बुरा था। हवा से दरवाज़ा खड़कता तो वे 'हाय' करके चीखतीं और उछल पड़तीं। कोई चीज़ भी गिरती तो डर कर काँपने लगतीं। उनके मन में तो इतना डर समा गया था कि उन्हें हर समय लगता कि कोई उनके पीछे खड़ा है। वे हर समय डरी, घबरायी और चिढ़ी रहतीं। हर समय मुड़-मुड़ कर चारों ओर देखती रहतीं और चकरघिन्नी की तरह नाचतीं। डर के मारे न उन्हें नींद आती, न वे शांत ही बैठ सकती थीं। इस तरह हमारी करतूतें खूब रँग ला रही थीं। टाम के बेकार कामों पर जहाँ हमें खीझ होती थी वहीं हमें भी अब मज़ा आने लगा।

टाम का कहना था कि आज तक उसकी कोई भी योजना इतनी सफल न हुई थी, न इतना मजा ही आया था। टाम ने कहा, 'अब हमारी पूरी योजना की सफलता में कोई शंका नहीं है। अब हमें धड़ाका कर ही देना चाहिए।'

दूसरे दिन हम मुँह-अँधेरे ही उठे और दूसरा गुमनाम पत्र लिख कर तैयार किया। लेकिन अब उसे ठीक जगह पहुँचाने की समस्या थी क्योंकि रात को हमने खाना खाते वक्त सुना था कि घर के अगले व पिछले दरवाज़ों पर रात-भर पहरा देने को दो-दो हबशी तैनात किये गये हैं। मेरी तो किसी तरह भी हिम्मत न पड़ी। लेकिन टाम हिम्मत हारने वाला न था। वह टोह लेने को बिजली के खंभे के सहारे नीचे उतरा तो देखा कि पिछवाड़े के दरवाज़े पर पहरा देने वाला हबशी खर्राटे भर कर गहरी नींद में सो रहा है। बस टाम ने पत्र उसकी गर्दन में खोंस दिया और चुपचाप लौट आया। इस पत्र में लिखा था—

'खबरदार, मेरे साथ किसी तरह का धोखा न हो। मैं तुम्हारा

दोस्त हूँ और तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ। इंडियन इलाके के खूंख्वार बदमाश इधर आ निकले हैं। वे आज रात तुम्हारे भागे हुए हबशी को चुरा ले जायेंगे। वे इधर तुम्हें बराबर डरवाते रहे हैं ताकि तुम डर कर बराबर अपने घर में दुबके बैठे रहो और बाहर निकलने की हिम्मत न करो। मैं उन्हीं का एक साथी हूँ लेकिन भला आदमी हूँ और अपने साथियों के बुरे कर्मों और अत्याचारों से ऊब गया हूँ, तंग आ गया हुँ। मैंने उनका साथ छोड़ने का निश्चय कर लिया है। इसीलिए उनके बुरे इरादों की जानकारी तुम्हें देते हुए सतर्क भी कर रहा हूँ। वे लोग उत्तर की तरफ से बाड़ी लाँघ कर ठीक आधी रात में आयेंगे। उन्होंने पहले से ही नक़ली चाभी बनवा ली है और उसी से झोंपड़ी का ताला खोल कर हबशी को निकाल ले जायेंगे। मुझे पहरे पर तैनात किया गया है कि मैं दूर छिप कर सब देखता रहूँ और खतरा होने पर टीन का बिगुल बजा कर उन्हें सावधान कर दूं। लेकिन मैंने तय कर लिया है कि कुछ भी हो मैं बिगुल नही बजाऊँगा। और उनके अन्दर घुसते ही भेड़ की तरह मिमियाऊँगा। उस समय वे भीतर घुसे कैदी की बेड़ियाँ काट रहे होंगे। तुम फौरन पहुँच जाना। लड़ना, झगड़ना नहीं और चुपचाप दरवाज़े पर ताला लगा देना। बस, वे घिर जायेंगे। फिर उन्हें जैसे चाहो मार लेना। जैसे मैं कह रहा हूँ—ठीक वैसे ही करना। कुछ और करोगे तो शक हो जायेगा और तुम्हारी जान को खतरा पैदा हो जायेगा। मैं तुम्हारा शुभ-चिन्तक हूँ। मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए। तुम्हारी मदद करके एक भला काम करने की खुशी और संतोष ही मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम है।

—गुमनाम मित्र।'

गुमनाम चिट्ठी ठिकाने पर पहुँचा कर हम बड़ी उमंग में थे। और

खुश थे। सवेरे-सवेरे डट कर नाश्ता किया और उसके बाद ही एक मिनट भी बरबाद किये बिना हम दोनों नाव ले कर नदी में मछली पकड़ने गये। आज हम लोग ज़रा मौज-मस्ती में थे। दोपहर का खाना भी साथ ही ले गये। बड़ा मज़ा आया। लगे हाथ हमने बेड़े की भी देख-भाल कर ली। वह सही-सलामत था, बिल्कुल ठीक-ठीक दशा में। इस प्रकार पिकनिक मनाते हुए हमने सारा दिन हँसी-खुशी में काटा और फिर शाम तक घूमते रहे और कहीं जाकर रात को खाने के समय घर वापस लौटे।

घर आकर देखा कि वहाँ सबों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। सभी बुरी तरह घबराये हुए थे। हमारी समझ में न आया कि दिन-भर में ऐसा क्या हो गया। किसी ने कुछ बताया भी नहीं। हमारी उत्सुकता बढ़ती गयी। फिर खाना समाप्त होते ही हमें सोने के लिए भेज दिया गया। हमें यह भी नहीं बताया गया कि क्या मुसीबत आ गयी है। न ही हमें उस दूसरे गुमनाम पत्र के बारे में कुछ बताया गया, न उसके बारे में हमारे सामने कोई चर्चा ही की गयी। एक प्रकार से हमसे सब कुछ छिपाया गया। यों उनके बताने या कहने-सुनने की कोई ऐसी जरूरत भी नहीं थी क्योंकि हमसे कुछ छिपा न था, लेकिन हमने भी कोई विशेष उत्सुकता नहीं दिखायी, हम लोग खाना खाने के बाद अपने सोने वाले कमरे में नहीं गये। हम लोग आधी सीढ़ियाँ ही चढ़े थे कि मौसी की पीठ मुड़ती दिखायी दी और हम भी जल्दी-जल्दी तहखाने वाले कमरे में उतर गये। चुपचाप और जल्दी-जल्दी आलमारी खोल कर काफी सारा खाना निकाला और उसे लेकर अपने कमरे में लौट आये और आराम से टाँगे फैला कर लेट गये। कोई साढ़े ग्यारह बज गये और टाम ने मौसी का वह गाउन पहन लिया जिसे वह चुपके से उठा लाया था। हम लोग खाना लेकर रवाना हो ही रहे थे कि टाम ने पूछा, 'मक्खन कहाँ है ?'

मैंने कहा, 'मक्का की रोटी के टुकड़े पर एक पूरा लोंदा तो मक्खन का रखा था।'

'यहाँ तो नहीं दिखता, शायद तुम यह टुकड़ा वहीं छोड़ आये !'

'लेकिन मक्खन की ऐसी ज़रूरत ही क्या है ? उसके बिना भी तो काम चल ही सकता है।'

'काम तो यह खाना न रहता तो भी चल ही जाता। हर काम को अधूरा और बेढंगे तरीक़े से करने की तुम्हारी आदत है। चुपचाप तहख़ाने में जाकर मक्खन ले आओ। तब-तक मैं चल कर जिम के कपड़ों में भुस भरता हूँ ताकि मौसी का यह गाउन पहना कर उस पुतले को जिम की जगह खाट पर लिटाया जा सके। तुम बिजली के खंभे की राह आ जाना। फिर संकेत के अनुसार मेड़ की ओर जाकर मिमिया कर भीतर चले आना। समझे !'

इतना कह कर टाम तो खिड़की की राह बाहर निकल गया और मैं तहख़ाने में पहुँचा। वहाँ मक्खन का एक बड़ा लौंदा रखा था। मैंने उसे रोटी के साथ ही उठा लिया और मोमबत्ती बुझा कर वापस लौटा। मैं चुपचाप बिना कोई आवाज़ किये सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर तक आ गया। किसी ने भी न देखा, न किसी से सामना ही हुआ लेकिन जैसे ही ऊपर-वाले ज़ीने की ओर बढ़ा कि जाने कहाँ से हाथ में मोमबत्ती लिये मौसी वहाँ आ गयी। डर कर अपनी चोरी छिपाने को मैंने रोटी व मक्खन अपने टोप में डाल कर उसे सिर पर पहन लिया। लेकिन इतने में शायद उन्होंने मुझे देख लिया था और वे परेशान होकर पूछ बैठीं, 'क्या तुम नीचे गये थे, तहख़ाने के कमरे में ?'

'हाँ।'

'क्यों, क्या करने ?'

'कुछ भी नहीं ?'

'लेकिन इतनी रात गये वहाँ क्यों गये ? क्या काम था ?'

'कुछ भी नहीं।'

'तुम गये और कहते हो कुछ भी नहीं। ठीक-ठीक बताओ कि नीचे क्या करने गये थे ? यों छिपाने से काम नहीं चलेगा, बताना पड़ेगा,

समझे !'

'मैंने वहाँ कुछ भी नहीं किया, मौसी ! सच, भगवान की कसम, कुछ भी नहौ किया मैंने ।'

मैं समझ गया कि अब फँस गया। मौसी यों आसानी से न छोड़ेंगी । दूसरा कोई और दिन होता तो और बात थी, लेकिन आज सभी परेशान थे और उनकी समझ से आजकल जैसी अजीब-अजीब बातें हो रही थीं उनसे उन्हें क़दम-क़दम पर हर बात में सन्देह की गंध आती थी, जो स्वाभाविक भी था। किसी प्रकार की गड़बड़ी को आज वे इतनी आसानी से छोड़ने वाली न थीं। मौसी ने ज़रा डाँटने और आदेश देने के स्वर में कहा, 'अच्छा तो अब सीधे बैठक में जाओ और जब तक मैं न आ जाऊँ, वहीं रहना। मैं जानती हूँ कि तुम ज़रूर कोई शैतानी करने ही नीचे गये थे ! पहले मैं जाकर नीचे देख आऊँ तब तुम से निबटूँगी।'

वे नीचे तहखाने की ओर चली गयीं और मैंने आगे बढ़ कर बैठक का दरवाज़ा खोला। भीतर जाकर देखा कि वहाँ भी लोगों की भीड़ लगी हुई थी, पास-पड़ोस के लगभग पन्द्रह किसान बंदूके लिये बैठे थे। मैं बुरी तरह उलझन में फँसा, वहाँ जाकर एक कोने में एक कुर्सी पर जा बैठा। मैं मन ही मन टाम पर नाराज़ हो रहा था कि वह बिना मतलब मुझे हमेशा झंझट में फँसा देता है। मैंने देखा कि बैठक में बैठे किसान आपस में कुछ खुसुर-पुसुर कर रहे थे। सभी बहुत दबे स्वरों में फुस-फुस बोल रहे थे। सभी बहुत अधीर और व्यग्र थे, साथ ही अपनी परेशानी छिपाने की कोशिश भी कर रहे थे। लेकिन उनकी परेशानी छिप न पा रही थी। यों परेशान तो मैं था ही, लेकिन मैं टोप तो उतार ही नहीं सकता था। मेरी चोरी का राज़ तो टोपी के नीचे ही छिपा था न !

मैं वहाँ बैठा मन ही मन सोच रहा था कि किसी तरह जल्दी से मौसी आ जाये, जो कुछ कहना-सुनना या डाँटना-फटकारना या मारना-

पीटना हो सो सब कर के जल्दी मुझे छुट्टी दे दें ताकि मैं टाम से जाकर कह सकूँ कि अब यह सब बेवकूफियाँ बंद करे और जल्दी से बिना एक क्षण गँवाये जिम को लेकर फौरन भाग चलना चाहिए, नहीं तो जो लक्षण हैं कि हम सब अवश्य ही पकड़े जायेंगे तब। जिम की रिहाई भी न हो सकेगी और हमारी ऐसी कुटम्मस होगी कि छठी का दूध याद आ जायेगा।

तभी मौसी आ गयीं। आते ही उन्होंने मुझसे वकील की तरह जिरह करना शुरू कर दिया। लेकिन जल्दी ही छुट्टी मिल गयी क्योंकि वहाँ इकट्ठे लोग बुरी तरह उतावले हो रहे थे कि फौरन चल कर अपने-अपने स्थान पर डट जाना चाहिए और डाकुओं से मुक़ाबला करने को तैयार हो जाना चाहिए क्योंकि अब जल्दी ही बारह बजने वाले थे। एक ने यह भी कहा कि अभी यहीं ठहरना चाहिए और जब मिमियाने की आवाज़ आये तब बाहर जाना चाहिए।

आखिर में मैं बुरी तरह घबरा गया। गर्मी के मारे हालत बुरी थी। तभी एक दुर्घटना हुई कि टोप के नीचे छिपाया हुआ मक्खन गर्मी के कारण पिघलने लगा और गर्दन और कानों के पीछे से बह चला। मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। लगा कि मैं अब बेहोश हो जाऊँगा।

मौसी ने मक्खन को बहते देखा तो बुरी तरह घबरा उठीं, उनका चेहरा सफेद पड़ गया और वे चीख उठीं, 'हाय, हाय, देखो तो इस लड़के को क्या हो गया ? जरूर इसके दिमाग़ में कोई ख़राबी आ गयी है। मारे गर्मी के इसका दिमाग़ पिघल कर बहने लगा है। बाप रे बाप ! अब क्या किया जाये ?'

मौसी की चीख़ सुनते ही सभी मेरी ओर झपटे। मौसी ने भी लपक कर मेरा टोप उतारा और रोटी का टुकड़ा और मक्खन का बचा-खुचा टुकड़ा छप्प् से ज़मीन पर आ गिरा।

पहले तो मौसी कुछ समझ ही न पायीं पर दूसरे ही क्षण समझ कर

खुशी से नाचती हुई मुझे छाती से चिपका कर चिल्ला उठीं, 'हाय-हाय! कितना शैतान है तू! कैसा मुझे डरा दिया रे! मैं तो मर ही गयी थी कि तेरा दिमाग़ क्यों पिघलने लगा। हम लोग तो यों हीं मुसीबत के मारे हैं। तुझे भी कुछ हो जाता तो भला मैं क्या मुँह दिखाती? अरे शैतान, पहले क्यों नहीं बता दिया कि इसी शैतानी के लिए तू नीचे गया था! अच्छा, अब जा, भाग कर बिस्तर पर सो रह। अब सबेरा होने के पहले दिखायी मत देना, समझे!'

मैं चिड़िया की तरह फुर्र-फुर्र उड़ता हुआ ऊपर कमरे में पहुँचा, फिर उसी तरह बिजली के खंभे के सहारे नीचे उतर गया। अँधेरे में ही तूफान की तरह भागता हुआ टाम के पास पहुँचा, तब साँस धौंकनी की तरह चल रही थी और मेरे मुँह से ठीक से बोल भी नहीं निकल रहे थे। फिर किसी तरह जल्दी-जल्दी-टाम को सारी स्थिति बतायी और कहा कि एक क्षण की देरी किये बिना हमें फौरन वहाँ से भाग जाना चाहिए। मकान के भीतर इतनी बड़ी संख्या में बंदूकधारी बैठे हैं।'

लेकिन मेरी बातें सुन कर घबराने के स्थान पर टाम प्रसन्न हो उठा और बोला, 'क्या सच! इतने लोग वहाँ इकट्ठा है? तब तो सचमुच मज़ा आ गया!'

मैं खीझ उठा। टाम की बात काट कर चिल्ला उठा, 'जल्दी करो, जल्दी! जिम कहाँ है?'

'वह क्या है, तुम्हारे पास ही तो खड़ा है। उसने कपड़े पहन लिये हैं और सारी तैयारी हो चुकी हैं। हम लोग अब यहाँ से चम्पत हो जायेंगे और बाहर निकल कर भेड़ की बोली बोल कर मिमियायेंगे।'

तभी झोंपड़ी की ओर भाग कर जाते हुए लोगों के पाँवों की आवाज़ सुनायी दी। किसी ने झोंपड़ी के दरवाज़े पर लगा ताला टटोला और कहा, मैंने तो पहले ही कहा था कि अभी बहुत जल्दी है, वे अभी नहीं आये होंगे। यहाँ तो ताला पड़ा है। अच्छा, ऐसा करो कि कुछ

लोग भीतर छिप जाओ और मैं बाहर से ताला लगा देता हूँ। जब वे आयें तो अँधेरे में उन्हें पकड़ा जा सके। बाकी लोग चारों तरफ़ बिखर जाओ। और सुनते रहो कि वे किधर से आते हैं।'

कुछ लोग झोंपड़ी के भीतर धुसने लगे। हमारी तो साँस ही रुक गयी। लेकिन अब समय न खो कर हम एक क़तार में ताबड़-तोड़ भागे। आगे-आगे टाम, फिर जिम और उसके पीछे मैं।

हम ताबड़-तोड़ भागे। शायद हमारे भागने से कुछ आवाज़ हुई हो क्योंकि गाँव वाले जो झोंपड़ी के आस-पास बिखरे थे, वे भी पीछा करने लगे।

लोगों के पीछा करने की आवाज़ बराबर आने लगी।

तभी दुर्भाग्य ने फिर हमारी राह रोकी। टाम की पैंट एक लकड़ी में फँस गयी। छुड़ाने को जो ज़ोर लगाया तो चटाख से लकड़ी टूट गयी। लकड़ी की आवाज सुन कर पीछा करने वाले भी चीखने लगे। एक डपटती-सी आवाज़ आयी, 'कौन है ? जवाब दो नहीं तो गोली मार दी जायेगी।'

हमने जवाब न दिया और नाक की सीध में भागे। लोगों ने पीछा किया। फिर बंदूक छूटने की धाँय-धाँय आवाज़ें आने लगीं। हमारे चारों ओर से दनदनाती गोलियाँ छूट रहीं थीं। एक ने पुकार कर कहा, 'जा रहे हैं। नदी की तरफ ! देखो भागने न पावें। पीछे लगे रहो। कुत्तों को उन पर छोड़ दो।'

हम जान छोड़ कर भागे जा रहे थे। पीछा करने वाले भी भागे आ रहे थे। काफी क़रीब आ गये। पकड़े जाने के डर से हम रास्ते में पड़ी एक झोंपड़ी में छिप गये। पकड़ने वाले शोर करते आगे निकल गये।

अब रास्ता साफ था। हम लोग आरा मिल और झोंपड़ियों के पीछे छिपते हुए नदी किनारे पहुँचे जहाँ हमारी नाव बँधी थी। हम फुर्ती से नाव में बैठे, ज़ोर से उसे ढकेला और तीर की तरह मँझधार की ओर भागे। थोड़ी देर में हम लोग टापू के पास आ गये। वहाँ पहुँच कर मैंने

सुरक्षा की साँस ली और जिम से कहा, 'तुम अब पूरे आज़ाद हो गये। अब तुम्हें कोई डर नहीं है।'

लेकिन हमारी खुशी फिर मुरझा गयी जब हमने देखा कि टाम की पिंडली में गोली लगी थी। उसके पाँव से खून लगातार बहता जा रहा था। उसे नाव पर लिटा कर ड्यूक की कमीज फाड़ कर उसके पाँव में पट्टी बाँधनी शुरू की। तब टाम बोला, 'यहाँ रुकना मत, बढ़ते चलो। हमारी योजना सोलहों-आने सफल रही है। हम कामयाब हुए हैं। कमाल हो गया। काश, हमें इसी तरह सोलहवें लुई को छुड़ाने का मौक़ा मिला होता! तब कम से कम उसकी जीवनी में आज यह तो न लिखा होता कि सेन्ट लुई का पुत्र स्वर्ग सिधार गया। हम उसे इसी तरह छुड़ा लाते। खैर!'

तभी जिम ने कहा, 'तुम लोगों ने मुझे मुक्त किया है। मैं तुम्हारे एहसानों से दबा हूँ पर जब टाम भैया को गोली लगी है तो डॉक्टर को दिखाये बिना मैं यहाँ से न तो हटूँगा न किसी को जाने दूँगा, न नाव आगे बढ़ने दूँगा।'

टाम और जिम को समझा कर मैं डॉक्टर को बुलाने चला गया। पहले तो टाम ने इसका बड़ा विरोध किया पर जब हमने उसकी एक भी न चलने दी तब उसने कहा, 'अच्छा, तो डॉक्टर की आँखों में पट्टी बाँध कर लाना और उससे वायदा करवा लेना कि किसी से वह ज़िक्र नहीं करेगा। उसे पहले से ही एक थैली भर कर डालर दे देना और गाँव की गलियों में खूब घुमा-फिरा कर नाव तक ले आना। उसकी तलाशी ले लेना कि उसके पास चाकू-वाकू न हो।' फिर उसने जिम से कहा, 'और जिम, तुम भी जब डॉक्टर को आते देखो तो छिप जाना और उसके वापस जाने पर ही निकलना।'

मैंने जाकर डॉक्टर को जगाया। वह सो रहा था। देखने में मुझे वह

बूढ़ा डॉक्टर दयालु और शरीफ़ लगा । मैंने उससे कहानी गढ़ कर बतायी कि मैं और मेरा भाई कल तीसरे पहर एक द्वीप में शिकार खेलने गये थे । वहाँ रात-भर एक नाव पर पड़े रहे । आधी रात के क़रीब भाई ने सपने में कोई शिकार देखा और सपने में ही उसने बन्दूक में ठोकर मारी तो गोली भरी बन्दूक छूट गयी और गोली उसके पाँव में लग गयी। उस समय तो मैंने पट्टी-वट्टी बाँध दी और यहाँ भागा आया । अब आप को लिवाने आया हूँ कि चल कर आप उसकी गोली निकाल दें और उसकी मरहम-पट्टी कर दें । लेकिन प्रार्थना है कि यह बात आप किसी को बतायेंगे नहीं, नहीं तो हमारे अभिभावक हमारी खूब पिटाई करेंगे । आज ही शाम को हम लोगों को घर जाना है ।'

डॉक्टर ने पूछा, 'तुम किस परिवार के हो ?'

'फेल्प्स परिवार का, जो यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर रहता है ।'

'अच्छा ठीक है ।' कह कर डॉक्टर कुछ सोचने लगा । फिर पूछा 'हाँ गोली कैसे लगी ? तुम अभी क्या बता रहे थे ?'

'सपने में बंदूक चलने से गोली लगी है ।'

'बड़ी विचित्र बात है । ऐसा सपना तो मैंने कभी नहीं सुना ।' कह कर वह मुस्कराया और उठ कर उसने लालटेन जलायी और अपना बेग उठा कर तैयार हो गया ।

उसे लेकर जब मैं नदी किनारे पहुँचा तो डॉक्टर ने कहा, 'यह नाव तो छोटी है। एक आदमी के लिए तो काफी है, लेकिन दो आदमी नहीं बैठ सकते । डूबने का खतरा है ।'

'नहीं, ऐसी बात नहीं । डरने की कोई बात नही । हम लोग तो तीन-तीन आदमी बैठ कर गये थे और कुछ न हुआ ।'

'तीन कौन ?'

'मैं, मेरा भाई सिड और जी हमारी बन्दूक । मेरा मतलब बंदूक से है ।'

'अच्छा ! अच्छा !' कह कर नाव के पटरे पर पाँव रख कर ज़ोर

से झटका देने के बाद डॉक्टर ने सिर हिला कर कहा, 'ठहरो, मैं कोई बड़ी नाव खोजता हूँ। शायद मिल जाये।'

लेकिन वहाँ कोई नाव न मिली। तब डॉक्टर ने कहा, 'तो मैं अकेला ही जाऊँगा। तुम दूसरी नाव ढूंढ़ कर आना और न मिले तो मेरे वापस आने तक इन्तज़ार करना और चाहो तो अपने घर लौट जाओ और परिवार वालों को खबर देना।'

मैंने कहा, 'मैं कहीं नहीं जाऊँगा। यहीं आपका इन्तज़ार करूँगा।' और मैंने डॉक्टर से जहाँ टाम था, उस स्थान का पता बता दिया। तब डॉक्टर नाव पर अकेला ही चला गया।

डॉक्टर की प्रतीक्षा में बैठे-बैठे मुझे ख़याल आया कि मान लें कि टाम का पाँव तत्काल ठीक न हुआ और डॉक्टर ने ठीक करने में तीन या चार दिन लगा दिये तब हम क्या करेंगे! क्या इतने दिनों यहीं पड़े रहेंगे और क्या इतने दिनों डॉक्टर यह बात किसी से बताने को रोक रखेगा। मैं तो डॉक्टर के लौटने का इन्तज़ार ही करूँगा और अगर कहीं उसने कहा फिर जाना पड़ेगा तो चाहे मुझे तैरना पड़े तो भी मैं तैर कर साथ ही जाऊँगा और डॉक्टर को नाव पर ही बाँध कर रख लूंगा और नाव को बीच धार में खड़ा कर दूंगा ताकि वह भाग भी न सके। और जब टाम अच्छा हो जायेगा तो डॉक्टर को उसकी पूरी फीस देकर वापस भेज देंगे।

यही निश्चय कर के मैं रेत पर लेट गया। फिर जाने कब मुझे नींद आ गयी और जाने कब तक मैं सोता रहा, पता नहीं। जब नींद खुली तो सूरज आससान में बहुत ऊँचा उठ आया था। मुझे डर लगा कि कहीं डॉक्टर लौट न आया हो। अतः मैं सीधा भागता हुआ डॉक्टर के घर गया। वहाँ पता लगा कि डॉक्टर रात को कहीं गया है और अभी तक नहीं लौटा। मुझे शक हुआ कि शायद टाम की हालत ज़्यादा ख़राब है। अतः मैंने फौरन ही टाम के पास पहुँचने का निश्चय किया। दौड़ता हुआ मैं नदी के किनारे जा रहा था कि एक सड़क के मोड़ पर अचानक

मैं एक बूढ़े आदमी से टकरा गया। रुक कर मैंने उसे देखा। अरे, वह तो मौसा थे !

मुझे देखते ही वे बोले, 'अरे टाम ! शैतान कहीं का ! अभी तक तू कहाँ था रे ?'

'यहीं तो था। मैं और सिड उसी फरार हबशी को ढूँढ़ने में व्यस्त थे।'

'जाने तुम लोग कहाँ चले गये थे ! चलो, चलो, घर चलो। तुम्हारी मौसी बहुत परेशान हो रही हैं।'

'इसमें परेशानी की क्या बात है ! हमें कुछ हुआ तो नहीं। हम बड़ी अच्छी तरह रहे। लोगों के साथ हबशी का पीछा कर रहे थे। और लोग तो भागते हुए आगे निकल गये पर हम दोनों पीछे रह गये। थोड़ी देर बाद नदी से उनकी आवाज़ आयी तो हम एक नाव लेकर उन्हें खोजने गये। इसी तरह उन्हें खोजते हुए हम नदी के उस पार चले गये। पर कहीं कोई न दिखा तब थके-माँदे जब वापस आये तो चलना मुश्किल था। नाव किनारे पर बाँध कर थकान मिटाने को लेटे और फिर ऐसी नींद आयी कि अभी जगा हूँ। उठे तो फिर उसे ही सोचने में लग गया। अब थोड़ी देर में हम सीधे घर ही आवेंगे।'

लेकिन बूढ़े ने तत्काल मेरा हाथ पकड़ लिया। कहा, 'नहीं, नहीं अब तुम्हें कहीं नहीं जाना। सीधे घर चलो। सिड को हम लोग खोज लेंगे।' उनसे हाथ छुड़ाना मुश्किल था। वे हाथ पकड़े-पकड़े चले। रास्ते में डाकखाने से उन्होंने अपने नाम आयी एक चिट्ठी ली। मैंने बहुत कहा कि मुझे छोड़ दें। मैं सिड को ढूँढ़ कर अभी आ जाता हूँ। लेकिन वे किसी तरह भी न माने। बोले, 'नहीं। मेरे साथ ही चलो। वहाँ तुम्हारी मौसी रो-रोकर परेशान हो गयी है। तुम्हें देख कर उसे धीरज बँधेगा और हम लोग सिड को ढूँढ़ लायेंगे।'

घर पहुँचे तो मुझे देखते ही मौसी ने मुझे गले से लगा लिया और खूब रोयी और बोली कि सिड को आ जाने दो तब दोनों की खबर लूँगी।

घर में किसानों और उनकी बीवियों की भीड़ लगी थी। सभी खाना

खा रहे थे ।

तीसरे पहर जब सभी मेहमान चले गये तो मौसी ने मेरे पास बैठ कर पूछा, 'अब कहो, कहाँ थे तुम ? और सिड कहाँ है ?'

मैंने बताया, 'रात को शोर-गुल और गोलियाँ छूटने की आवाज़ सुन कर मेरी व सिड की नींद खुल गयी । हम बहुत डरे और घबराये लेकिन दरवाज़ा तो बाहर से बन्द था । अतः बिजली के खंभे के सहारे फिसल कर नीचे आ गये । हम दोनों को थोड़ी चोटें भी आयीं ।'

इतना सुन कर मौसी बोली, 'कोई बात नहीं । भगवान का शुक्र है कि ज़्यादा चोटें नहीं आयीं । तुम लोगों को कुछ हुआ नहीं, नहीं तो मैं क्या मुँह दिखाती ?' कह कर उन्होंने मुझे चूमा और खूब प्यार किया । फिर अचानक चौंक उठी और बोली, 'हाय राम, रात होने को आयी और सिड का अभी तक कोई पता न चला ! उस लड़के को क्या हो गया है ?'

मैंने मौके से लाभ उठाने को कहा, 'अगर मुझे एक बार आप शहर जाने दें तो मैं उसे खोज लाऊँगा ।'

'नहीं, तुम अब कहीं नहीं जाओगे । तुम्हारे मौसा उसे खोजने खुद जा रहे हैं ।'

फिर रात का खाना भी हो गया लेकिन सिड नहीं लौटा और तब मौसा उसे खोजने निकले ।

क़रीब दस बजे परेशान होकर मौसा लौटे और बताया कि सिड का कहीं पता नहीं चला । परेशानी और चिन्ता के मारे मौसा का बुरा हाल हो रहा था । मौसी तो बुरी तरह रोने लगीं ।

फिर मौसी बत्ती जला कर उसके इंतज़ार में खिड़की पर जा बैठीं ।

मुझे जाकर अपने कमरे में लेट जाना पड़ा ।

मुझे नींद तो नही आयी । रात-भर मैं टाम के लिए परेशान रहा । रात में दो बार बिजली के खंभे के सहारे उतरना चाहा पर हर बार मौसी को रोशनी लिये खिड़की पर प्रतीक्षा में बैठे पाया ।

किसी तरह रात कटी । सबेरे उठ कर नीचे गया तो पता चला कि

मौसा तो सबेरे ही सिड की खोज में निकल गये हैं। फिर चारों ग्रोर चक्कर लगा कर वे उदास मन लौट ग्राये। उदास मन से नाश्ता करने लगे। तभी जैसे उन्हें कुछ खयाल ग्राया ग्रौर उन्होंने मौसी से पूछा, 'तुम्हें मैंने चिट्ठी दी या नहीं ?'

'कैसी चिट्ठी ?' मौसी ने पूछा।

'वही, जो कल डाकखाने से ले ग्राया था।'

'नहीं तो, तुमने कोई चिट्ठी नहीं दी।'

'शायद मैं देना भूल गया।' कह कर उन्होंने ग्रपनी सभी जेबें टटोलीं लेकिन चिट्ठी न मिली। फिर उठ कर कमरे में गये ग्रौर लाकर वह चिट्ठी मौसी को दी।

देख कर मौसी ने कहा, 'यह तो सेंट पीटर्सबर्ग से ग्रायी है। बहन ने भेजी है।'

मैं डर गया कि पता नहीं कि उस चिट्ठी में क्या लिखा हो। तभी मौसी ने लिफाफा खोला ग्रौर पढ़ने जा ही रही थीं कि ग्रचानक चिट्ठी को एक ग्रोर रख दिया ग्रौर दरवाज़े की ग्रोर दौड़ पड़ी। मैंने भी उधर ही देखा। उधर से टाम सायर ग्रा रहा था। एक ग्रादमी उसे गोद में उठाये हुए था। उसके साथ वही बूढ़ा डाक्टर था ग्रौर जिम को बाँध कर कई लोग ला रहे थे। मैंने झपट कर मौसी के पत्र को उठा कर छिपा लिया ग्रौर बाहर की ग्रोर दौड़ा।

देखा कि मौसी दहाड़ मार कर रो रही थीं ग्रौर टाम सायर सन्निपात के मरीज़ की तरह बर्रा रहा था।

टाम को भीतर लाकर खाट पर लिटाया गया। डाक्टर ग्रौर मौसा उसके पीछे-पीछे भीतर ग्राये। साथ के लोग बंदी बने जिम पर नाराज़ हो रहे थे कि इसी के कारण सब को परेशानी उठानी पड़ी। जिम सब की बातें चुपचाप सुन रहा था।

जिम को ले जाकर फिर उसी कोठरी में बंद कर दिया गया।

तब डाक्टर ने कहा, 'जिम को तंग मत करो। वह बहुत शरीफ़

है। इसने गोली निकालने और इलाज करने में मेरी बहुत मदद की है।'

दूसरे दिन टाम की दशा में सुधार नज़र आया, इससे सभी ने संतोष की साँस ली। मैं छिप कर टाम के पास पहुँचा पर वह गहरी नींद में सो रहा था।

थोड़ी देर बाद टाम ने आँखें खोलीं। तब उसे चारों ओर देख कर आश्चर्य हुआ। वह बोला, 'अरे, मैं तो घर में हूँ। यहाँ कैसे आया? कौन लाया? नाव कहाँ है?'

'सब ठीक है, तुम फिक्र मत करो।' मैंने कहा।

'और जिम!'

'वह भी ठीक है।'

'क्या तुमने मौसी को सब बता दिया?'

मेरे जवाब देने ने पहले ही मौसी बोल उठी, 'किस बारे में?'

'जिस तरह यह सारा काम हुआ?'

'क्या काम?'

'हम लोगों ने ही तो उस बंदी हबशी को छुड़ाया है।'

मौसी चुपचाप टाम की बातें सुनती रहीं।

वह बोला, 'बड़ी मेहनत पड़ी। हफ्तों हमने दिन-रात एक कर के मेहनत की है।' कह कर टाम ने कहानी की तरह सभी बातें बताना शुरू किया।

सब सुन कर मौसी ने कहा, 'उसे फिर हमने झोंपड़ी में बंद कर दिया है।'

टाम एकाएक उठ कर बैठ गया। क्रोध से उसका चेहरा लाल हो उठा और आँखों से अंगारे बरसने लगे, 'जाओ और उसे फौरन आज़ाद करो। उसे बन्दी बनाने का किसी को भी अधिकार नहीं है।'

तभी दरवाज़े पर किसी को खड़ा देख कर सभी चौंक उठे। मैंने भी

देखा कि दरवाज़े पर टाम की माँ पौली मौसी पास खड़ी थीं। आकर उन्होंने टाम से कहा, 'टाम, तुम अपना मुँह कैसे दिखाओगे ? कौन तुम्हारी बात का विश्वास करेगा ? तुमने बहुत भारी शरारत की है।'

मौसी चीख उठीं, 'हाय हाय, क्या वह इतना बदल गया कि तुम पहचान भी नहीं पा रही हो ?'

'क्या बात करती हो ?'

'ठीक तो कहती हूँ। यह टाम नहीं, यह सिड है। टाम तो वह रहा। अरे, अभी तो यहीं था। कहाँ गया ?'

'वाह, खूब रही ! क्या मैं पागल हूँ जो इन्हें न पहचानूँ ?'

'वह तो फ़िन है।'

मुझे किवाड़ों के पीछे से निकलना ही पड़ा। अब तो हम दोनों पकड़े गये, भगवान ही बचावे !

तब पौली मौसी ने भेद खोल दिला। उन्होंने मेरे बारे में वहाँ उपस्थित सभी से बता दिया कि मैं कौन हूँ।

पौली मौसी ने आगे बताया कि मिस वाटसन ने जिम को गुलामी से मुक्त कर दिया है।

पौली मौसी ने यह भी बताया कि सैली मौसी से यह पत्र पा कर कि टाम और सिड सकुशल पहुँच गये, उन्हें बड़ी परेशानी और बड़ा आश्चर्य हुआ। यह तो वे उसी समय समझ गयीं कि टाम ने यहाँ पहुँच कर ज़रूर ही कोई शैतानी की है। अब इसके सिवा और कोई चारा न था कि वे खुद ग्यारह सौ मील नदी द्वारा यात्रा कर के यहाँ आतीं और अपनी आँखों देखतीं कि इस शैतान लड़के, आफत के पर काले ने क्या गज़ब ढा रखा है। क्योंकि उनके लिखे कई पत्रों में एक का भी जवाब इधर से नहीं गया।

यह सुन कर सैली मौसी चौंक उठीं, बोली, 'क्या कहती हो, बहन ? मुझे तो तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। बल्कि अपने ही पत्रों का उत्तर न पा कर मैं मन ही मन दुखी और नाराज़ थी।'

'बड़े आश्चर्य की बात है ! मैंने एक नहीं दो-दो पत्र लिखे और हर बार यही पूछा कि सिड के वहाँ पहुँचने से तुम्हारा क्या मतलब है ? सिड तो गया ही नहीं ।'

'नहीं बहन, मुझे तो तुम्हारा एक भी पत्र नहीं मिला ।'

पौली मौसी ने फौरन टाम की ओर मुड़ कर कठोर शब्दों में कहा, 'सुन लिया सब, टाम ?''

'हाँ, सुन तो रहा हूँ लेकिन क्या मतलब !' टाम ने ढिठाई से जवाब दिया ।

'देख, मैं तुम्हें खूब समझती हूँ । यह मतलब-वतलब की बात मत कर । सीधे-सीधे मेरे ख़त मेरे हवाले कर । ज़रूर ही तू मौसी के नाम आये मेरे ख़तों को ग़ायब किया करता था ।'

'कैसे ख़त ?'

'अभी बताती हूँ, कैसे ख़त ! मुझसे उड़ने की कोशिश मत कर । चल उठ, निकालता है या नहीं दोनों ख़त ! या बिना पिटे तेरी अक़्ल रास्ते पर नहीं आयेगी ?'

'जाओ जाओ ! मेरे संदूक में रखे हैं । जाकर निकाल लो । जैसे आये थे वैसे ही हैं, देख लेना । मैंने उन्हें खोला तक नहीं है, पढ़ने की बात तो दूर रही । बस डाकखाने से लाकर सीधे संदूक में रख दिये । मैं पढ़ता भी क्यों ? मैं जानता था कि तुमने ज़रूर ऐसी ही बातें लिखीं होंगी जिससे यहाँ हम लोगों के लिए परेशानी पैदा हो जायेगी क्यों कि तुम मुझे कहीं भी चैन से नहीं रहने दे सकतीं और यह भी जानता था कि तुम्हें जवाब पाने की कोई जल्दी भी नहीं होगी, इसीलिए ।'

'बहुत दिनों से तेरी पिटाई नहीं हुई है ना ! इससे लगता है कि तेरे दिमाग़ में बहुत ज़्यादा फितूर आ गया है । लेकिन यह मत भूल कि अब मैं आ गयी हूँ और तेरा सब फितूर मैं मिनटों में निकाल कर रख दूँगी । तो क्या वह ख़त जिसमें मैंने अपने आने के बारे में लिखा था, उसे भी इसने...।'

'नहीं, नहीं, वह तो अभी कल ही आया है और अभी तक मैं पढ़ भी नहीं सकी हूँ, लेकिन वह खत मेरे ही पास है, और हिफ़ाज़त से है।'

मेरे मन में तो आया कि में मौसी से दो-दो डालर की बाज़ी लगाऊँ और कहूँ कि जाकर देखलो, वह खत भी तुम्हारे पास नहीं है। लेकिन तभी ध्यान आया कि मौसी को चुनौती देकर और बाज़ी लगा कर मैं बेकार ही नयी परेशानी में फँस जाऊँगा। इसलिए मैं चुप रहा और मन ही मन मौसी की होशियारी समझता रहा।

मुझे जैसे ही टाम से एकान्त में बातें करने का मौक़ा मिला कि मैंने उससे पूछा कि सही-सलामत निकल आने के बाद यानी एक हबशी को गुलामी से मुक्त करने के बाद, वह आगे क्या करना चाहता था, या इस संबंध में उसकी क्या योजना थी।

टाम ने बताया कि इस सम्बन्ध में उसने योजना तो बहुत पहले ही बना ली थी मगर वह दिमाग़ में ही रही। मन में तो यह था कि जिम को छुड़ाने के बाद तरह-तरह के अद्भुत और अनोखे कारनामे करते और मुसीबतों का सामना करते हुए नाव से ही नदी के मुहाने तक जाते। वहाँ जाकर उसे नाव से उतार कर कह देते कि जिम अब तुम पूरी तरह आज़ाद हो। फिर शान से अपनी ही नाव या अगनबोट से वापस आते। जिम को इतने दिनों के हरजाने की रक़म भी देते। पहले से पत्र देकर आसपास रहने वाले सभी हबशियों को खबर कर देते कि आज़ाद हबशी जिम का स्वागत करने आवें और गाते-बजाते, मशाल जला कर नाचते-कूदते, जलूस के साथ शहर में ले जायें। खूब बैण्ड-बाजा और धूमधाम करने को कहते। इस प्रकार जिम हबशियों का नायक यानी लीडर बन जाता और इसी बहाने हमारे नाम की भी धूम मच जाती।

लेकिन, चलो, मेरे विचार में जो कुछ हुग्रा वह भी कुछ कम बुरा नहीं रहा।

।

इतनी बातें होने के वाद फ़ौरन जिम की वेडियाँ काट दी गयीं। ग्रौर वह ग्राज़ाद कर दिया गया। जव मौसी-मौसा ग्रौर सैली मौसी को पता चला कि जिम ने टाम की मरहम पट्टी में डाक्टर की पूरी मदद की है ग्रौर दिन-रात सेवा-शुश्रुसा में जुटा रहा है तो वे सभी बहुत खुश हुए ग्रौर उसकी इज्ज़त करने लगे। जिम को उन्होंने कई ग्रच्छे-ग्रच्छे कपड़े पहनने को दिये। उसे खूब वढ़िया खाना खिलाया ग्रौर ग्राराम से विठाये रखते, काम कुछ भी करने न देते।

मैं जिम को टाम के पास उसके कमरे में लिवा ले गया। वहाँ हमने खूब ग्रौर तरह-तरह की वातें की। टाम ने जिम को उसकी सेवाग्रों के लिए ज़बरदस्ती चालीस डालर भी दिये।

जिम की खुशी का क्या कहना ? फूल कर कुप्पा हो रहा था। उसने कहा, 'मिस्टर फ़िन, वह याद है, मैंने तुम्हें जेकसन टापू पर क्या कहा था ? मैंने कहा था कि मेरी छाती पर वाल हैं ग्रौर यह ग्रादमी के ग्रमीर होने की निशानी है। मैंने कहा था मैं पहले भी एक वार ग्रमीर था ग्रौर ग्रागे फिर ग्रमीर हो जाऊँगा। देखो, मेरी यह बात ठीक निकली या नहीं ? ग्राख़िर में, मैं ग्रमीर हो गया न ? ग्रब तुम यह कभी मत कहना कि वे निशानियाँ, ये शकुन, ये सब वेकार होते हैं। नहीं-नहीं, यह सब सच होते हैं। इनका प्रभाव भी सच होता है। मैं इन्हीं के भरोसे विश्वास करता था कि एक न एक दिन ग्रायेगा जब मैं ग्रमीर ग्रादमी बनूंगा ग्रौर ग्राज वह दिन ग्रा भी गया।'

बातें करते-करते टाम भूल गया कि वह ग्रस्वस्थ है ग्रौर फिर उमंग में ग्राकर यहाँ-वहाँ, जाने कहाँ-कहाँ की बातें करने लगा। फिर बोला—'चलो, एक रात हम तीनों यहाँ से चुपचाप खिसक चलें, ग्रौर कुछ

हफ़्तों के लिए इंडियन इलाके में घूमने और जोखिम उठाने की कोशिश करें। लेकिन इस अभियान के लिए सामान काफी जुटाना पड़ेगा।'

मैंने बचाव के लिए कहा—'मैं तो तुम्हारी योजना के अनुसार तैयार हूँ लेकिन अब यात्रा के लिए साज-सामान खरीदने के लिए अपने पास पसा एक भी नहीं है और न ही घर से ही आ सकता है, क्योंकि मेरा विश्वास है कि मेरे पिता जी अवश्य ही लौट आये होंगे और जज थेचर से उन्होंने पाई-पाई वसूल कर सब की शराब पी डाली होगी।'

टाम ने बताया, 'नही-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उन्हें एक भी पैसा नहीं मिल सकता। पूरे छह हज़ार डालर और ऊपर का पैसा भी सब का सब जज साहब के पास जमा है। और तुम्हारे पिता जी अभी तक तो लौटे नहीं। कम से कम मेरे आने तक तो वे आये न थे।'

'और मिस्टर फ़िन, वे अब कभी लौटेंगे भी नहीं।' जिम ने बड़ी गम्भीरता और विश्वास के साथ कहा।

'क्यों ?'

'यह मत पूछिये कि क्यों ? मगर मैं जानता हूँ कि अब वे कभी नहीं लौटेंगे।'

लेकिन जब मैंने जिद ही ठान ली तो उसने अन्त में बताया, 'मिस्टर फ़िन, तुम्हें याद होगा कि एक दिन मैंने तुम्हें नदी में बह कर जाते हुए एक मकान को दिखाया था। यह भी याद होगा कि उसमें एक आदमी की लाश भी पड़ी थी और उसका चेहरा भी खुला हुआ था जिसे मैंने ढँक दिया था और तुम्हें देखने नहीं दिया था। मुझे यह बताने में दुख हो रहा है कि वह तुम्हारे पिता की ही लाश थी।'

सुन कर मैं कुछ बोल न सका।

धीरे-धीरे टाम बिलकुल अच्छा हो गया। उसने गोली को घड़ी की जंज़ीर में लटका लिया और हरदम अपने गले में डाले रहता और बार-बार देखा करता कि कितना समय हुआ है।

अब लिखने के लिए कुछ विशेष नहीं बचा। और मुझे भी इस बात की बहुत खुशी है कि अगर पहले से मुझे मालूम रहता कि किताब लिखना इतना कठिन काम है तो मैं कभी इस काम में हाथ न लगाता और अब भविष्य में तो कम से कम ऐसा भयानक संकल्प कभी करूँगा ही नहीं।

अब मैं सोच रहा हूँ कि दूसरों से पहले मैं ही इंडियन इलाके में अकेला ही चला जाऊँ। क्योंकि मुझे पता लग गया है कि पौली मौसी मुझे गोद लेने और मुझे अच्छा लड़का बनाने पर तुल गयी हैं। लेकिन यह मुझे किसी तरह भी मंजूर नहीं है।

मैं अपनी जिन्दगी अपने ढंग से ही बिताऊँगा।

० ० ०